आभासि भीम भय अभय सिंघ। सूरत्त दत्त एकंग रिंघ॥
साम्मंग्र राइ भर समर राउ। उद्वसे रोम भ्रगुटी उथाउ॥
छं० ॥ ९७४॥

जंपेव ताम दंष्यिन गुरेस। आयस्स सांइ अप्पौ सुदेस॥
उच्चरहि ताग आहुट्ट ईस। अप्पौ सुमंत सामंत दीस॥
छं० ॥ ९७५॥

प्रोकम्म कम्म उब्भार इष्ट। असि दाव घाव नंषौ अदिष्ट॥
दैवत्त कत्य आघात अप्पं। रष्षै सुदंड चारी सु दप्प॥ छं० ॥९७६॥

तुम उंच नाम सूरत्त साष। लष्यियै एक मभ्भेव लाष॥
रुव संजौ उद्ध सौजुद्ध मत्त। कीरत्ति अत्ति बड्डै कवित्त॥
छं० ॥ ९७७॥

जंपहि सुभट्ट सुनि समर राज। लष्यहु सु घत्त साब्रत्त काज॥
असि भ्राक बाक बज्जै अयास। सम मिलहि सूर नर जोति भास॥
छं० ॥ ९७८॥

उच्चरिग ताम सामंत सींह। निज भ्रात जुद्ध लष्यहु स लीह॥
सामंत सूर चहुआन भार। बुभ्भामि धीर बाजंत सार॥
छं० ॥ ९७९॥

आये सुभट्ट रावल्ल रहस्सि। उब्भरे व्योम लग्गे उहस्सि॥
आयो सुकन्ह सुहवन्न तोम। सुअ अनुज बंध सिष्षहि सुरोम॥
छं० ॥ ९८०॥

बाने विरद्द बंधे सुच्चार। आवरिय अधिक सूरत्त भार॥
भर हरिय भीर अग्गार सहार। संकरहि विषम सुर सोइ पार॥
छं० ॥ ९८१॥

भज्जनां राइ संकर पगार। सरनैत भ्रत्त बाहां उगार॥
भल हल्लिग तेज बर भाल भास। सूरत दत्त लग्ग अयास॥
छं० ॥ ९८२॥

उद्वसे रोम भ्रगुटी उथाह। वीरत्त घत्त बड्डै बराह॥
बिस्साल अंग आरत्त ओप। जग्गैव प्रलै मनु काल कोप॥
छं० ॥ ९८३॥

रोमंच उच्च भल्लरिं उथाल। उच्चर्यो सिंघ अग्गे सुढाल॥

इह मत्त रत्ति अम्माव सानि। उतमेछ सज्जि उभ्भै उतानि।

छं० ॥ ९८४ ॥

बलिभद्र वीर कैलास वान। कुब्बेर दच्छ मंते मतान ॥
इह जुद्ध विद्धि अष्पै वषान। कलुहंत केलि लग्गी भरानि ॥

छं० ॥ ९८५ ॥

उभ्भरै सद्द सुनि सुत्ति निसान। संभरिय राइ चहुआंन पान ॥
आतुर अनंत षग मग्ग दान। पति सरस मुगध बांछित विहान ॥

छं० ॥ ९८६ ॥

शिवजी का यक्ष से कहना कि इस युद्ध का संपूर्ण वर्णन करो।

कवित्त। सुनिय बत्त जटधार। चित उभ्भार रहसि रजि ॥
मन विलास तन भास। रोम उल्लास तास सजि ॥
कहै दच्छ सम ईस। कहो वेताल विवरि कथ ॥
अति लग्गै आनंद। प्रेम पूरन भारथ्थ कथ ॥
प्राक्रम नाम सुभटन प्रथक। कहै बीर सा विवरि विधि ॥
असुरान पान हिंदू तुरक। ताहि सु जंपौ जुत्त अधि ॥

छं० ॥ ९८७ ॥

यक्ष का युद्ध का विधिवार हाल कहना।

दूहा ॥ कहै दच्छ कैलासपति। सुनि धर श्रवन सुठान ॥
सुभर जुद्ध लग्गे अतुल। चाहुआन सुलतान ॥

छं० ॥ ९८८ ॥

प्रातःकाल होतेही राजपूत वीरों का घर द्वार को तिलांजुली देकर युद्ध के लिये उद्यत होना।

कवित्त। होत प्रात सब सूर। बज्जि घरियार फट्टि पहु।
मिलि बारन बर राज। बीर संदेस तत्त कहु।
स्वर्ग मग्ग रुक्किये। चित्त रष्षौ पुनि धीर ॥
अच्छरि वर संग्रहै। लेहु अच्छरति सरीर ॥
इत्तौ न हेच दंपतिय हित। दुहुं न सरन हित आजयौ ॥

जाने कि चित्र पुत्तरि लिषिय। जीव कविन इन लग्गा॥

छं० ॥ ६८६ ॥

दूहा। दै पानी ढिल्ली धरा। मन सा पानी रष्षि ॥
सो चिंत्यौ संभरधनी। जन्म सुकित्तिय अष्षि ॥

छं० ॥ ६६० ॥

लज्ज सुही गहिये इला। कट्टिय कित्ति न लग्गि ॥
दिन सो नर मिलि आइयै। गोरी अंग्गि सुजग्गि॥

छं० ॥ ६६१ ॥

रावल जी का कन्हा से कहना कि तुम पीछे की सेना की सम्हाल पर रहो।

जोर मंडि कन्हा रहै। बड़ गुज्जर रष्याइ॥
सज्जि सेन चतुरंगिनी। उत्तर रतन बजाइ ॥

छं० ॥ ६६२ ॥

इत सूर सो उग्गते। चहुआना सह पार।
कूक मच्चिय सरहौ सरिय। जग्गि अभंगे भार॥

छं० ॥ ६६३ ॥

सूर सुअन जुद्धित अथिग। गई सु तिथ्थि अतीत ॥
वाम कलह कंदल अनी। भौ प्रतिपद्द अदीत ॥

छं० ॥ ६६४ ॥

कन्हा का कहना कि हम तुमसे पहले जूझेंगे।

चित्रकोट पति सों कहै। कन्ह सुभर बर ताइ ॥
हम तुम अग्गे झुझ्झिहै। इह जुद्धानी राइ ॥

छं० ॥ ६६५ ॥

कवित्त ॥ गिर संभरि दच्छिन नरेस। निज मत्त मंत बर।
तुम जंपहु सामंत। सूर अति तेज जुद्ध जुर ॥
आज दैव तुम सेव। कौन साजै जुध हथ्थं ॥
पल असंषि पुदहि। षयांर बंधौ बर हथ्थं ॥
पल परहि जाम तुट्टहि धरंनि। जाम हड्ड कट्टै सुभ्भर ॥

दह गुनो बीर बीरत्त जगि। ताम तेज बंधहि सुभर ॥
छं० ॥ ६९६ ॥

रावल जी का पुनः समझाना परंतु वीर कन्हा का हठ करके युद्ध में प्राण देने को उद्यत होना।

विअष्षरी ॥ तब रावर झंपै सम कनहं। हौं बुझ्झों तुम तेज मवन्नं ॥
तुम रष्षहु सुपच्छ धर बंधं। तुम राजौ गति राज सु संधं ॥
छं० ॥ ९९७ ॥

तु धर तेज नेज दल तोहं। तू राषै दच्छिन गिरि सोहं ॥
(१)तो पच्छं जेहौं बर बीरं। है सुर है राजै तौ नीरं ॥
छं० ॥ ९९८ ॥

तब हसि कन्ह कहै पति बंधं। रजै नही तुम बिना निबंधं ॥
हौं बंधो बर बिरद चियारं। लहियै सो(२) लागंते सारं ॥
छं० ॥ ९९९ ॥

मैं बंधेव बिरद तुम सोइं। सो आगें झेलंते खोइं ॥
अज्ज(३) कज्ज साईं मो कंधं। मो कंधं जोगिनि पुर बंधं ॥
छं० ॥ १००० ॥

जुद्ध अज्ज(४) मो इन्द्र निरष्षै। अज मो कंदल देव दनु लष्षै ॥
पल परबत्त रचौं गढ़ भारं। सलिता स्रोन प्रगट्टै सारं ॥
छं० ॥ १००१ ॥

जुध कोतिग कारी आनंदं। जोगिनि जच्छ बीर उनमदं ॥
रनचर चास करौं पल पूरं। को सामंत मरा भर सूरं ॥
छं० ॥ १००२ ॥

तब समसिंघ कहै षुम्मानं। हौं बुझ्झों तुम तेजर नानं ॥
मैं रष्षन तुम दिल्ली न किन्हं। सोइ कारन मैं चिंतन चिन्हं ॥
छं० ॥ १००३ ॥

रहैं नही बर सिंघ पच्छ बर। बिनसै क्रत कारन जोगिनि पुर ॥

(१) मो०—तो पच्छै जैहै बर बीरं। (२) ए०—मौ।
(३) मो०—अन। (४) ए० कृ० को०—कज्ज।

तुम प्राक्रम्म लही भर सारं। बंधहु बंध भिरौ भर भारं ॥

छं० ॥ १००४ ॥

तब रावर मिलि कन्ह प्रसंसे। आलगे राजे रह अंसे ॥

छं० ॥ १००५ ॥

रावल जी का कन्ह की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ धरिय हथ्थ सिर कन्ह। अप्प अति अत्ति प्रसंसे ॥
आभासिय बर भर। अप्रान जंपे गुन अंसे ॥
उभै एष्ष सम सष्ष। बंध बंधे भर रष्षै ॥
विमल नेह निज लीह। धम्म स्वामित्त सुलष्षै ॥
उभ्भारि तेग एकेक अग। स्वामि अग्र बोलै बिहसि ॥
दूष्षै व अग्र आसुर सयन। गयन लगिग गज्जै रहसि ॥

छं० ॥ १००६ ॥

रावल जीं के आज्ञानुसार राजपूत सेना का गरुड़व्यूहाकार रचा जाना।

अप्प सुभर आहुट्ट। ईस देषे आति दुज्जर ॥
ताम हरषि सुभ तेज। गज्जि बीरत्त बीर बर ॥
तब जद्दव कूरंभ। हृष्षि चिंते मन अप्पं ॥
अनिय व्यूह सज्जन। सुभार उभ्भर दल दप्पं ॥
बुझ्झोव ताम चिचंग पहु। बरं आसुर झझ्झार बर ॥
भिरैं न अकल अरिहर गहर। अति आवट्टहि दुट्ठ घल ॥

छं० ॥ १००७ ॥

तब जद्दव कूरंभ। राय रावल प्रति बद्दिय ॥
चामर छत्र रषत्त। ग्रद्ध व्यूहं रचि गट्टिय ॥
एक पंष बलिभद्र। एक पंषह जामानिय ॥
चुंच कंध पुंडीर। सेन संमुह सुरतानिय ॥
पग पिंड सिंघ आहुट्ट पति। पुच्छ रचि मारू महन ॥
बामंग अंग प्रथिराज कै। सुभर जुद्ध मत्तौ गहन ॥

छं० ॥ १००८ ॥

उधर हम्मीर को बीच में देकर यवन सेना का चन्द्र व्यूहाकार होना।

दूहा ॥ उत आसुर सेना रची। मझझ[४] हाहुलि जंबु ॥
वह देषी चहुआन नृप। मुष झलहलि लगि लुंब[५]॥
॥ छं० ॥१००९ ॥

पुंडीर सेना का धावा करना।

कवित्त ॥ अरध चंद्र तत्तार। षान षन षान षुरेसी ॥
षां रुस्तम सारफ। गरुअ गष्परति गुरेसी ॥
हाहुलि राव हमीर। भ्रमर बंधे दल दोही ॥
जिहि संसारह आय। सांइ दोही सिर जोही ॥
बिहु भाय ढलकि बहल मिलिग। करिगह मीरह दुअ बहसि ॥
पुंडीर राइ पावस न्रिपति। लरन लोह[१] कहु सुहसि ॥
छं० ॥ १०१० ॥

दूहा ॥ फुनि पावस पुंडीर पति। बरु करि बिनवै बत्ति ॥
गहि आनौ सुरतान कौं। कै हमीर सिर सत्त ॥ छं० ॥ १०११ ॥

पृथ्वीराज का पावस पुंडरी से कहना कि नमक हराम हम्मीर का सर अवश्यमेव काटा जाय।

तब राजा प्रथिराज कहि। सुनि पावस पुंडीर ॥
इतनौ परिहस सार[२] तुअ। काटहि सिर हम्मीर ॥
छं० ॥ १०१२ ॥

जथ्य गरुअ गोरी सयन। गगन खग्ग उडीर ॥
हुकम हंकि प्रथिराज दिय। तथ्य भिरन पुंडीर ॥
छं० ॥१०१३ ॥

---

(४) मो.-मद्धें। (५) मो.-मइस लहलि लागि लैंब।
(१) ए. कृ. को.-साह।

पुंडीर योद्धाओं का युद्ध।

रसावला ॥ जे पुंडीर जत्ती। महामल्ल घत्ती।
लगें जोह गत्ती। मनो बीज पित्ती॥

छं० ॥ १०१४ ॥

अविहात छत्ती। जुटे मेछ पत्ती॥
मुदंगी सुरत्ती। रुरी भोरि मत्ती॥ छं० ॥ १०१५॥
गुजं घाय अत्ती। सतं बानि रत्ती॥
गहे दंत टंती। चढी कुंभ मंती॥ छं० ॥ १०१६॥
नचै जुग्गवंती। मनो इन्द्रपंती॥
रुधी धार रत्ती। मनो इन्द्र हुत्ती॥ छं० ॥ १०१७॥
इसी बीर बत्ती। सु भारथ्थ नत्ती।
निरष्षी फिरत्ती। मनं बेन रत्ती॥ छं० ॥ १०१८॥
दुहं सेन अत्ती। सुअं बानि रत्ती॥ छं० ॥ १०१९॥

कवित्त ॥ घरी अद्ध आवत्त। मेछ हिंदुअ जुध जुट्टे॥
सार धार निद्धार। सार झर सारह तुट्टे॥
दई बाह आहुट्ट। समर पारस रह धाइय॥
घरिय एक घरियार। सार बज्जै घन घाइय॥
प्राहार धार धारह धनी। कंन कन्नक सम्हौ चढ़िय॥
प्रतिपक्ष सघन आव्रत्त जुध। घरिय एक आवत्त बढ़िय॥

छं० ॥ १०२० ॥

हम्मीर की रक्षा के लिये तीन हजार गष्षरों सहित कुई यवन सरदारों का घेरा रखना।

सहस तीन गष्षर गुराय। हाहुलि हमीर बहि॥
मुररि मुररि मारूफ। ओट तत्तार षान रहि॥
षल षुरेस षन षान। जानि छंडिय षग झिल्लिय॥

(१) ए. कृ. को.—भीर। (२) ए. कृ. को.-वर्त्ता।

मनहु महिष मय मत्त। [1]कहर कानी दइ ढिल्लिय ॥
पुंडीर राइ पावस पहुर। झर उभार लग्यौ सयन ॥
कूरंभराय अरु जादवनि। अमर मोह भुल्ल्यौ सयन ॥
छं० ॥ १०२१ ॥

पुंडीर सेना का हम्मीर पर धावा करना।

हाय हाय उच्चार। भिरे पुंडीर सूर झलि ॥
बजिग लोह तन घन विहार। ग्रह्म संधी न मुष्ष षुलि ॥
पग्ग झटकि पायक प्रमोन। बीर उत्तरे सरम्भर ॥
रज्जि मेर बज्जं प्रहार। घाय अभंग भंग धर ॥
चढि कंध कमंधन जोगिनी। सह मह उन मह फिरि ॥
नारद सु तुंमर जुद्ध चर। जै जै जै उच्चार करि ॥
छं० ॥ १०२२ ॥

रसावला ॥ सु पुंडीर भारी, महमें पचारी। सुअं धग्ग झारी[2], सु सौंभै उभारी
छं० ॥ १०२३ ॥

सो लंगा सु नारी, हकारै उभारी। दई देवि तारी, गिधिं उत्त फारी॥
छं० ॥ १०२४ ॥

करि नैर तारी, गिरिच्चा प्रहारी। कुलं सत्ति तारी, लगैं आनि भारी॥
छं० ॥ १०२५ ॥

प्रिभ्भै बीर कारी, रतं नैन सारी। मह मोह धारी, छिनं मैं विसारी ॥
छं० ॥ १०२६ ॥

कह्हं अस्स तारी,[3] सुभैं रथ्थ कारी। उतमंग पारी, धवै षग्ग धारी ॥
छं० ॥ १०२७ ॥

निषंदी विधारी, असीसं उचारी। तिनं जोंग गारी मुकत्तीन[4] हारी॥
छं० ॥ १०२८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-कहर काती दई ढिल्लिय।
(२) ए. कृ. को.-धारी। (३) ए. कृ. को.-नारी।
(४) ए. कृ. को.-मुकत्तीत।

पगं मग्ग पारी, भिनं मभ्भ झ पारी। सिरं ईस सारी, हर त्यौ ब्रह्मचारी ॥

छं० ॥ १०२९ ॥

हम्मीर के एक भाई, पुंडीरों में से वारह योद्धा और वैजल खवास का काम आना ।

कवित्त ॥ पग्गि घाय नारेन । बंध हंमीर मुकतिबर ॥
द्वादस घट पुंडीर । सुभट उत्तरिय पग्ग भर ॥
धीर षवास वेजुला । झार धर धर तटि बंधर ॥
उप्पर मंडि उचार । बस्यौ हाहुलि इसंमर ॥
भच्चि बंस अग्ग पारिग परी । परिगह सोसह सीर धरि ॥
जीवत मरंत भंजन दुजन । सांम द्रोह कीजै न बरं ॥

छं० ॥ १०३० ॥

पुंडीर सेना के धावा करते ही यवन सेना के एक लाख ज़वानों का हम्मीर को घेर लेना ।

दस हजार असवार । लष्य पैदल सुपंति करि ॥
जबर जंग डरबान । छूटि हथनारि कूह करि ॥
सबर सूर पुंडीर । सार सहि सम्हो धायौ ॥
मार मार उंच्चार । बीर बर धीर उचायौ ॥
पनं बद्धि सूर कायर घटे । धरिय दीह उधरीय बर ॥
हम्मीरराइ जंबू धनी । लरन लोह पावस पहर ॥

छं० ॥ १०३१ ॥

पावस की पावस से उपमा ।

मुरिल्ल ॥ झरि पावस सिर बर प्राहारं । बरषत रुद्धि धरं छिछवारं ॥
षग विज्जुल जोगिनि सिरधारं । बग्गी सौ जंबू परिवारं ॥

छं० ॥ १०३२ ॥

त्रोटक ॥ कटि टूक करें जिनके किरयं । मनौं इंद्रवधू धरमें रचयं ॥
[१]झमक्कै सषग्गीन षग्गनि बजै । सुनि बद्दति झिंगुर सद्द लजै ॥

छं० ॥ १०३३ ॥

(१) ए. कृ. को.– झमक्कै स षग्गां नग्गन बजै ।

लपटांइ सुसोकिय वेलतरं। पर रंभन रंभन रंभ बरं॥
अकुरी बढि बेलि सुबीर बरं। बहि पावस पावस भारभरं॥
छं०॥ १०३४॥

पावस पुंडीर का हम्मीर का सर काट लेना।

कवित्त॥ स्वामि बचन संभारि। हकि हैगै पावस तइ॥
लाषति दल मिलि गयौ। साम द्रोही हंमीर जइ॥
उहि सोंही करि संग। इहित कर षग्ग समाह्यौ॥
घरी सुतन षिजि षेत। सीस दुरजन कौ बाह्यौ॥
बाहंन षग्ग कंप्यौ पिसुन। धर्मकि अंग धरजिहि परयौ॥
नारद बीर बेताल मिलि। जोगिनि सद जै जै करयौ॥
छं०॥ १०३५॥

दूहा॥ सीस छेदि लिय संगि बर। भषि साह दल मीर॥
आय सूर सामंत पें। धनि धनि जंपत धीर॥
छं०॥ १०३६॥

कवित्त॥ पिरिग धरनि हम्मीर। भीर भंजी सेना भिरि॥
निघटि सेन हम्मीर। तदिन ठढ्ढौ पुंडीर लरि॥
षान षान षावास। चढ्यौ धाराहर तई॥
स्वामि ध्रम्म पावस सुपति। चढे कित्ती चित सड्डौ॥
दलमलिग नाम दुज्जन सुपर। दह भज्जिय प्रथिराज घर॥
धीरंज धीर धीरहु तनी। जस सुध्रम्म लीनो सुधर॥
छं०॥ १०३७॥

पावस पुंडीर का हम्मीर का सर काट कर राजा के पास आना और राजा का उसे स्वामिभीन कहना।

जित्ति सेन हम्मीर। मान मरदे हम्मीरं॥
बजिय बाज नीसान। धजिय गज सबद सुबीरं॥
न्रप अग्गी उर दभ्भत। सुतन चंदन भो चंदन॥
अम्रत संचिमन उलसि। भयौ अरि कंद निकंदन॥
सों दोह कही चहुआन बर। तिन मुष सों साध्रम्म कहि।
पुंडीर धीर तसलीम करि। तेग पेग चौहथ्थ गहि॥
छं०॥ १०३८॥

च्यारि च्यारि बर तेग । राज अप्पी पुंडीरं ॥
बर बंध्यौ हम्मीर । बंध बंधन हम्मीरं ॥
तुं धीरं जा बीर । धीर किन्नौ सोइ किज्जै ॥
बहुआना सुलतानं । हथ्थ तेगह जब दिज्जै ॥
सो जननि भूत धन्न गरिय । पुत्तह मंगल गोन बर ॥
जो जीवंत पंचह पंजरै । गहैं साहि ज्यौ स्वामि घर ॥
छं० ॥ १०३९ ॥

तू चंदन कहि चंद । धीर सम धीर समानं ॥
तू अजव बंधै षग्ग । षग्ग षट्टौ षुरसानं ॥
तुं चाल क्यौ चूकि । भयौ सन्नाह जु साई ॥
तैं बर जित्ते तही । दइय दाडिम उग्गाही ॥
अट्ठौ नरिंद्र गोरी दलह । तो अग्गै चिनुवर असुर ॥
बंधी सुतेग सुरतान पर । है दुबाह दुज्जनह उर ॥
छं० ॥ १०४० ॥

दूहा ॥ धनि पावस पुंडीर पति । धनि धजि कहै सुदेव ॥
लै सिर अरि नृप पै गयो । कह्यौ आगिलो भेव ॥
छं० ॥ १०४१ ॥

हम तुमसों बहु बचन कहि । तब लाहौरी बत्त ॥
अब दल गज्जन साहि कै । पग बज्जन रह घत्त ॥ छं० ॥ १०४२ ॥

पावस पुंडीर के भाई का मारा जाना और पुंडीरों का पराक्रम वर्णन ।

रसावला ॥ सुलित्तान रज्जं, बजे षग्ग सज्जं । चढ़े लोह पज्जं, बंधे ग सि लुज्जं ॥
छं० ॥ १०४३ ॥

सुने सद्द अज्जं, निसानं निगज्जं । ढरी अंत रज्जं, सिनाली बिरज्जं ॥
छं० ॥ १०४४ ॥

तुटे कंध गज्जं, कमडंति भज्जं । भमै षग्ग छज्जं, मनों बीज घज्जं ॥
छं० ॥ १०४५ ॥

भयानंक पज्जं, तुटै बाजि सज्जं । परे भूमि तज्जं, ... ॥
छं० ॥ १०४६ ॥

(१) मो०-षग ।

ढरैं छूर अंती, गजं सोम दंती। कहै भूमि छत्ती, सुभारथ्य बत्ती ॥
छं० ॥ १०४७ ॥

सुतं सुत्त मानं, उछारै उमानं। कही देवि जीयं, बरदाइ दीयं ॥
छं० ॥ १०४८ ॥

हिंदू मेछ छूरं, तुरं बाजि तूरं। उपभ्भोम पूरं, गुरं भोजि घूरं ॥
छं० ॥ १०४९ ॥

दुधं मट्ट ढूरं,.......................। दो उंता उतारी, ...॥
छं० ॥ १०५० ॥

पार कढ्ढी छरी, काल नट्टं जुरी। चट्ट पट्टं अरी, चाहवानं सुरी ॥
छं० ॥ १०५१ ॥

हिंदुवानं गुरी, रत्तती अच्छरी। कीय छूरं जुरी, श्यो भरथ्यं हुरी ॥
छं० ॥ १०५२ ॥

धरी[1] च्यारं चुरी, चवं जे पुक्करी। भेद हिंदू अरी, मेछ प्रत्तं तरी ॥
छं० ॥ १०५३ ॥

पार पारस फिरी, सुरत्तानं गुरी। मान विंध्यं परी, ससी रह जुरी ॥
छं० ॥ १०५४ ॥

कवित्त ॥ घटिय सुच्यारि घरिघ। उदै पति अरुन चढ़त बर ॥
[2]परि पारस लहु बंध। मथिद गोरी सयन्न भर ॥
चिदस असुर नर नाग। जीति पुंडीर उचारिय ॥
जीति किक्ति जमनीति। जिक्ति पल कुल पय कारिय ॥
दंपत्ति ईस जय जय कहय। पंचिन जै जै उच्चरिय ॥
छूरंत वृंकि हयवान[3] कजि। जै अच्छरि पंकति फिरिय ॥
छं० ॥ १०५५ ॥

शहाबुद्दीन के हाथी का वर्णन।

सेत छच सुलतान। सेत चोरनि ढुलावै ॥
गज्ज मेघ आरिष्ट। सेन संमुह हलावै ॥
जूह जुद्ध आवत्त। चाव चतुरंग चंपि चलि ॥

(१) ए० कृ०—धर्रा

(२) ए० कृ० को०—जीत की तिम जीति।

(३) ए० कृ० को-हथथान।

सुद्द निहचल चहुआन । मेर आनंद चित डुलि ॥
मधमान मान घरि अद्ध टलि । हिंदु मेछ कहु विषग ॥
जंगली जुद्द सामंत सहर । सिर बज्जी घरियार मग ॥
छं० ॥ १०५६ ॥

दोपहर को रावल समर सिंह जी और तत्तार खां का मुकाबला होना।

समर सिंह रावरह । सहस तेरह हय छंडिय ॥
उत तत्तार गोरिय । विलष्ष रोरी रन मंडिय ॥
विहल डाल घोडल । अभंग मग पेलि विहथ्थइ ।
कहैं चंद बरदाय । सुनहु छत्रिय इह कथ्थई ॥
भंजि भर भरम जंमन मरन । तिरन तुंग सद्दे समर ॥
मुरि गये छंडि भारथ्थ में । कोइ अग्गै अप्पौ अमर ॥
छं० ॥ १०५७ ॥

दूहा ॥ मिले सूर सामंत सब । असुर तेग सम कड्ढि ॥
समर सिंघ रावर समर । समर भुअन बर चड्ढि ॥
छं० ॥ १०५८ ॥

भंजि भरम जंमन मरन । कर नन सिंघ समार ॥
[1]मुरिगम छिन भारथ्थ किय । अप्पौं अप्प अमार ॥
छं० ॥ १०५९ ॥

रसावला ॥ हिंदू मेछं भुरं, तार बज्जे हरं । पग्ग पेलै थियं, घाइ बज्जे नियं ।
छं० ॥ १०६० ॥

सार सारं भुरं, मंत मत्ते परं । बारुनी बारया, सूर पाना रया ॥
छं० ॥ १०६१ ॥

दंत कट्टै करी, बीर नंचै अरी । ढाल मालं ढरी, गज्ज जुथ्थं परी ॥
छं० ॥ १०६२ ॥

थान थानं रुरी, रोस ज्यों विच्छुरी । जोत जोतं जुरी, काल बगाल फिरी ॥
छं० ॥ १०६३ ॥

(१) मो०— मुरिग जिन भारथ्थ किय ।

घाट जा उत्तरी, फंद कढ्ढे नरी । सीस जा उत्तरी, दोम नंचै धुरी॥
छं० ॥ १०६४ ॥

"समर सिंहं जुरी, भार बितं तुरी .... ।
छं० ॥ १०६५ ॥

दूहा ॥ समर सिंघ आरथ्थ मिलि । उत मिलि षांन ततार ॥
अप्प अप्प भीरम्म करि । ज्यों बद्दल घन सार ॥
छं० ॥ १०६६ ॥

युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ दुअं सेन हक्कै हलक्कै गुमानं । बजै तुंब तुंबा द्रमं के निसानं॥
भयं नफ्फेरि भेरी भयानं । गनो मेघ गज्जै दिसानं दिसानं ॥
छं० ॥ १०६७ ॥

बजे याइ आवद्ध दज्जी हवाई । करी दीन दीनं दु दीनं दुहाई ॥
हदक्की हबक्का करै नेज नेजं । महा मल्ल वल्लै अमं जानि तेजं ॥
छं० ॥ १०६८ ॥

गिरै उतमंगं उठे श्रोन खल्लै । सुभै दंग लग्गै सुपाचक्क प्रल्लै ॥
नचै कंध हीनं कबंधं कलापं । जगी जोगनी जोग जापं अलापं ॥
छं० ॥ १०६९ ॥

रंगी रंग भूमी वितालं उसद्दं । धरै कंध उद्धं बिरद्दं बिरद्दं ॥
गयंनंति गिद्धं सुसिद्दं विमानं । बरं रंभ रथ्थं सुरं तंत थानं ॥
छं० ॥ १०७० ॥

षवं लोक पालं कद्दं क्रुह भीरं । लियौ तात संगं महा मत्त बीरं॥
जयी आप जोगिंद जालप्प थानं । तजी डक डोरो सु सिंगी गियानं॥
छं० ॥ १०७१ ॥

तहां तत्त बेदो कबी चंद गढ्ढी । उमा ईस दीसं बलीभद्र ठढ्ढौ ॥
तहां सुष्प दुष्पं न मानं न तातं । चयं तुंग तुंवी[2] महा मोह बात
छं० ॥ १०७२ ॥

दूहा ॥ जालप सों जटधार कहि । समर समर आवृत्त ॥
देव न दानव असुर सुर । इह जुटानी बत्त ॥ छं० ॥ १०७३ ॥

---

(१) ए० कृ० को०-लगी । (२) ए०कृ० को०—त्वंग त्वबी ।

तत्तार खां के मारे जाने पर निसुरत्त खां का समर करना।

कवित्त ॥ मुरंत षान तत्तार । ताम निसुरत्ति षान लषि ॥
अनुज बंध साहाब । भ्रम्म स्वामित्त सूर तषि ॥
सहस दून सेनो । सुभार गज्जं गहथंत्तं ॥
बीर धीर बर बंस । जुद्ध जांनैं जुर घत्तं ॥
उच्चरै मंच चर आसु चिर । अनिय बुंध चल्लैं बिहंसि ॥
समरंत बीर बिरदैत घन । कलपि प्रान उब्भारि असि ॥
छं० ॥ १०७४ ॥

चंपंत आसुर सेन । हक्क उब्भार भार असि ॥
हल हलंत दल हिंदु । भइय पुम्मान भीर बसि ॥
ताम कन्ह गुरु मन्त्र । षग्ग सज्जो सु ब्योम सिर ॥
सिंघ कज्ज चिचंग । लाज गज्जे व भार सिर ॥
सय सत्त सथ्थ भर बीर वर । हंकं धुक्क बोले बिहसि ॥
बंधेव चरल मन मंडि इरि । लोहरिम्म लग्गे रहसि ॥
छं० ॥ १०७५ ॥

मुकुंदडामर ॥ मिलि लोह उहस्सि उहस्सिय हस्सिय आवरि[1] बीर सुधीर भरं ॥
सब जंपिय इष्ट अभिष्ट तनं पति जग्गियं असि उहस्सि भरं ॥
तब गज्जिय कन्ह महाभर उब्भर आनन सूर उवंन उवं[2] ॥
असि ब्योम सुधूम धरे धुम मंडल सूर प्रसंसिय सूर सुअं ॥
छं० ॥ १०७६ ॥

मिलि षग्ग उनग्ग करूर करष्षियं षंडहि षंड बिहंग षलं ॥
धरकंत धरक्क भार भरभ्भर होय हलं मल दून दलं ॥
बिहरंत धराधर सार बिषंडल तुट्टित वाह दुबाह दुरं ॥
मुरकंतह हक्क कडंकडत कंधर स्रोन दउक्क दउक्क जुरं ॥
छं० ॥ १०७७ ॥

हहकंत हकंतह बक्कत बक्कत सेल हवक्कह बक्क षगं ॥
बचयं भर आनंदु आनंदु अप्पति कंठह कंठ सुकंठ लगं ॥

(१) मो०—आदरि । (२) मो०—अनत्त उचं ।

भिमन्नं कित बांजिय सार सुसाजिय तुट्टि सुसुंड पिकारि भजं ॥
पल पूरिय गूंदह कीच परारिय श्रोन प्रवाह दुवाह सजं॥
छं० ॥ १०७८ ॥

घनन[1] कित घंट सकत्ति स रूरिय पूरिय कंठ पियाम धरं ॥
धर नंचिहि बीर सुभीर बजाग्गहि गिद्धि झरक्झर होर झरं ॥
तब गज्जिय कन्ह महाभर उब्भर दुब्भर हंकि हिलोलि दलं ॥
दह पिंड अहुट्टिय आसुर सुब्भझर हंकिय चंपिय हिंदु दलं ॥
छं० ॥ १०७९ ॥

निमुरत्त के एक हज़ार योद्धा मारे जाने पर शाह का उस की मदत करना।

कवित्त ॥ दल आसुर दह पिंड । लोह झर भर आहुट्टिय ॥
सहस एक निज सेन । देषि निसुरत्ति सु घट्टिय ॥
तब आवरतन बीर । सेष सेना आभासिय ॥
मम भज्जौं धरो लाज । करौं कंदल असि रासिय ॥
परसंसि सहस सेना सकल । बल बंधयौं साहाब गज्जि ॥
तजि मोह पिंड सजि भिरति मन । भाथ दीन महमुंद भजि ॥
छं० ॥ १०८० ॥

दूहा ॥ दुह कहंत दल बल भरिग । धरि दिसान सुलितान ॥
उररि सेन उप्पर परिग । चहुआना सुविहान ॥
छं० ॥ १०८१ ॥

कन्हराय और निमुरत्त खां का द्वंद युद्ध और दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै देषियं कन्ह आवंत सेनं । सयं तीन सेषं भरं अप्प ऐनं ॥
तबै इन डोडंन गज्जे गहक्के । दुअं पास कप्पान धारे सुचक्के ॥
छं० ॥ १०८२ ॥

करें झार उभझार झारं करारं । समै सूर क्रम्मै थलं सारं सारं ॥
हहक्कंत धक्कंत धक्कंत धीरं । दुए पग्ग घंडे धरं पग्ग भीरं ॥
छं० ॥ १०८३ ॥

(१) मो०—घननंतिय।

कटै जंघ जंगं बनं रंभ जानं । पलं गूद हड्डं थरं सम्म थानं ॥
अलुझ्झंत अंतं सुभट्टं सुपायं । करं घाय सेलं दुहथ्थें दुहायं ॥
छं० ॥ १०८४ ॥

फिरक्कंत फेफं खरक्कंत डिंभं । धरक्कंत झुझ्झंझ धरं हंकि सिंभं ॥
पलंचार श्रोनं चरं हंस न्नारं । अघायं सुघायं नचै सुभ्भकारं ॥
छं० ॥ १०८५ ॥

लगे आसुरं हिंदु सों घग्ग षारे । करें घाय गज्जें गहक्के गुरारे ॥
सयं तीन ताई परे जाम मंतं । सतं बीस अग्गं करें हिंदु अंतं ॥
तबै कन्ह देवं निसुरत्ति षांनं । मिलं दिट्ठ दिट्ठी करूरं दुरानं ॥
छं० ॥ १०८६ ॥

दुअं हंक हक्के गहक्के व सूरं । बिरहैत दूनं दुअं जुद्ध पूरं ॥
धरं स्वामि ध्रम्मं दुअं उद्धक्रम्मं । दुअं तेन धारौ जुरे जुद्धत्रंमं ॥
छं० ॥ १०८७ ॥

दुअं हक्कि असासि सांभासि दूनं । दुअं संगि उभ्भारि निभ्भारि ऊनं ॥
करौंसिंह सांहाव सोसाहि आनं । मिले झुझ्झ ढिझ्झे दुकं ठौर जानं ॥
छं० ॥१०८८ ॥

चलयौ कन्ह गज्जे व लग्यौ अयासं । दुअं आय अड्डे निसुरत्ति तासं
दुअं बंध हम्मांम कम्माम षानं । हवस्सी चले हंकि सो कन्ह ढानं ।
छं० ॥ १०८९ ॥

करं मार झारं स उभ्भार नेजं । फटै टट्टरं दून तुट्टं भरं जं ॥
हने षग्ग कंधं दुअं सीस झारे । मनों श्रीफलं फट्टि मल्लं मुरारे ॥
छं० ॥ १०९० ॥

बिना अंसु कांसेवरं कंन्ह नं षे । चलयौ रिम्म संमं धरे जुद्ध षंषे ॥
मिले हक्कि कन्हं निसुरत्ति षानं । करे षग्ग उभ्भै चवै ढान ढानं ॥
छं० ॥ १०९१ ॥

हंए षग्ग झारं दुअं सीस तुट्टे । लगे व्योम कंमंध सासूर उट्टे ॥
दुअं बीह षग्गं उछज्जे बिराजें । बिना देवलं इंदु धज्जा सुसाजें ॥
छं० ॥ १०९२ ॥

असी झार झारें तिनं बष्पलग्गै । धर छोनि लुट्टै जुरै बीर जग्गै ॥
उठे सेन कासे वरं सूर षेतं । दुअं बीर झझ्झै निजं स्वामि हेतं
छं० ॥ १०९३ ॥

प्रसंसे तुरक्कं सबै हिंदु तासं । धन्नं धन्नि जंपै सुरं सो अयरसं ॥
करूरं सुगत्ती जगी जोग राहं । लहै अच्छयं लोकसो हंस ठाहं ॥
छं० ॥ १०९४ ॥

इसौ जुद्ध कन्हं महाबीर कीनं । महा जोति में जोति संथान लीनं ॥
महाजोग धयानं सुग्यानं जुमत्ती । जुरै जुद्ध पार्वतिका सार हत्ती ॥
छं० ॥ १०९५ ॥

जिके कन्ह चिचंग सों बोलबोले । तिके षग्ग मग्गं दरंबार षोल्ले ॥
इसी जुद्ध सेनापती राउ कीनौ । जिने षान निसुरत्ति कों भिस्त दीनौ ॥
छं० ॥ १०९६ ॥

कवित्त ॥ परे षान निसुरत्ति । करै प्राक्रम उद्दअति ॥
सुभट सहस सारद्ध । सध्य निज रोह मुक्ति षिति ॥
सो मुनि अ:सुर सेन । भंयौ हलाहल चालमन ॥
सायर लहर उलट्टि । कप्पि थट्टं थट्टं घन ॥
संभले ताम साहाब तमि । क्रमि सुअंत झलझाल चषि ॥
कलमलिय कोप आरत्त तन । फिरै तप्पि साभित्त लषि ॥
छं० ॥ १०९७ ॥

मियां मुस्तफा का धावा करना !

मियां माव मुस्तफा । उभै बंधव असि उब्भर ॥
धरा रोम उद्धरन । धरा स्वामित्त समुद्धर ।
सोय निरषि साहाब । दई अग्या तम्मि तामं ॥
तुम लष्यौ तत्तार । भार मंडे सिर कामं ॥
निसुरत्ति हयौ रावर भरन । हलहलंत तत्तार दल ॥
तुम जाय जुरौ उप्पर करौ । परौ बंध बंधेव भर ॥
छं० ॥ १०९८ ॥

(१) ए० कृ० को०— चले ।

रावल जी के सरदारों का अतुल पराक्रम और दोनों भाई मुस्तफ़ा मीरों का माराजाना।

भुजंगी। दुअ संभलें बाच गोरी नरिंदं। सजे वयोम सीसं बिकस्से सुचिंदं॥
दुअं नाय सीसं चले ध्रम्मधारी। मनों उभ्भरे बीर बीरंत भारी॥
छं० ॥ १०९९ ॥

सहस्सं दुअं चव सथ्थें समीरं। चले बाग उच्चैं बिरचैं अभीरं॥
मिले आय अडुव आहुट्ठ रायं। भरं अत्ति चिंते बनी धन्निताय॥
छं० ॥ ११०० ॥

गजं जैत सिंहं अरस्सीह बीहं। तमे तेजसी बीर बावंन लीहं॥
नरं सिंह सांजंन सो बंधिचालं। रजे तेज रत्तं नसारंल भालं॥
छं० ॥ ११०१ ॥

बधे बीर सामंत सो बीर रूपं। अरज्जुन्न जेमं अरज्जुन्न ओपं॥
भरं भीम जेमं गजे भीम देवं। जगं माल जग्गे अरी साल केवं॥
छं० ॥ ११०२ ॥

सहस्सं समेकं सबं एक सथ्थं। मिले षेत षग्गं गजे हथ्थ हथ्थं॥
तिनं मुस्तफा मान सों सेन हक्के। धराबीर बाजिन्त नीसान धक्के॥
छं० ॥ ११०३ ॥

सुरं पूरि सिंधुर वहं सुषेतं। झलक्कं झलक्के बंधे बंध नेतं॥
तबै असुरं दीन गोरी दुहाई। जंपै आन षुम्मान हिंदू लराई॥
छं० ॥ ११०४ ॥

दुअं संभरे इष्ट अप्पं अपानं। मिले नेत धारी उभारै किमानं॥
रुके बान आंगंग मुहं मरीचं। तिरच्छे मिले षग्ग तत्ते तिरीचं॥
छं० ॥ ११०५ ॥

तने तीर आवद्ध बज्जै चिकूटं। हुवै षंड षंडं लगै जूट जूटं॥
कटै जंघ रंभं समं हेम भासं। ढरैं बांह कम्मोद नालं सुरासं॥
छं० ॥ ११०६ ॥

परी सीस छुक्कै सुधक्कै कलेवं। रजे बीर रस्सं बिसम्मं सुदेवं॥

(१) ए० कृ० को०—लागं।

षलकंत श्रोनं अबोलं प्रवाहं । पलं कीच मच्ची सरुभ्भ सुराहं ॥
छं० ॥ ११०७ ॥

धरं गज्ज भारं दुआरं करारं । तरं ढाल नेजा दुरोजा उभारं ॥
घनं बालु की बाह आसत्ति रेहं । रसंमं असंमं उतं रभ्भ[1] देहं ॥
छं० ॥ ११०८ ॥

नदी रत्त पूरं गजं सीस कच्छं । समं अप्प वेनी नरं तंत मच्छं ॥
रजे केन उस्नीष आवृत्त रूपं । जलं ज्ञात वेनं अली नेन ओपं ॥
छं० ॥ ११०९ ॥

कटे इभ्भ बाहं सग्राहं करूरं । मिले क्रम्म है गात भातं दुरूरं ॥
मराली ग्रहे तंत अंतीस मद्धी । रजे पंष हारी उदारी सुसिद्धी ॥
छं० ॥ १११० ॥

इसौ जुद्ध आजुद्ध मच्चै[2] अपारं । मिले बाहु घत्ता तुटे सब्ब सारं ॥
लषे देव आहब्ब कौतिग्ग उत्तं । न दिट्ठौ मनं अप्प मन्नै अभुत्तं ॥
छं० ॥ ११११ ॥

जुटे मुस्तफा सींह सामंत षग्गै । दुअं वृत्तधारी क्रितं स्वामिअग्गै ॥
उभै धारि उभ्भारि संगी दुहथ्थं । जपै आंनईसं जपै इष्टतथ्थं ॥
छं० ॥ १११२ ॥

दोऊ लग्गि[3] उरं चले चंपिपूरं । लगे हथ्थ बथ्थं जमं जद्ध सूरं ॥
तनं षंड षंडं समं सानि मंसं । चले उत्त गत्ती न लप्पेव अंसं ॥
छं० ॥ १११३ ॥

महाजोध चिचंग औधूत राजं । अयो जानि मेरं डिगै नाहि वाजं
प्रलै काल लग्गौ सुअसुरान सेनं । करे देव जै जै उचारं तिबेनं ॥
छं० ॥ १११४ ॥

बरं जुद्ध बिरदैत रावल समानं । नहीं सूर कोई इसे नेजधानं ॥
छं० ॥ १११५ ॥

(१) ए० कृ० को०—इत्त
(२) ए० कृ० को०—मचौ। (१) ए० कृ० को०—लान।

मीर मुस्तफा के मारे जाने पर शाही सेना में से ग्यारह मीरों का धावा करना।

कवित्त ॥ पर्‌यो मान मुस्तफा। इष्षिं धर रोम समुद्दर ॥
हल हल्लि सेन ततार। मच्छ दह पिंड धरद्दर ॥
तब मसंद दह एक। आय अड्डे बर बीरहं ॥
मिले सुभर चिचंग। जंग उत्त असि धीरहं ॥
गजनेस साजि आयास सिर[1]। लगे लोह तत्ते तरसि ॥
रन परे विहंडे षंड भर। अनिय धार सानं[2] धरसि ॥
छं० ॥ ११११६ ॥

अरिल्ल ॥ पर्‌यौ देषि मुस्तफा महाभरं। हल हलि आसुर सेन रिंघनर ॥
लग्गे दोय बीर रस ब्योमह। गज्जहि सूर काढ्ढि पलकौ भह ॥
छं० ॥ ११११७ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं में घोर युद्ध।

त्रिभंगी ॥ इष्षि ततारं सेन सुभारं मुस्तफं छारं हलिहालं ॥
जग्गे तन बीरं अप्प सनीरं धीर सुधीरं लषि ढालं ॥
चंपे चहुआनं कर उत्तानं जपैं आनं सुभ्भानं ॥
गज्जे गुह मीरं सेन सुभीरं रुंधे तीरं षलिषालं ॥
छं० ॥ ११११८ ॥
बज्जे बज्जानं रन रुहानं मय महीनं ढरि ढालं ॥
सिंध सुररहं बीर बिरहं रज्जे मंहं रन[3] चारं ॥
चौसठ्ठि सुरारं गाजि गुरारं महि मदारं जैकारं ॥
छं० ॥ ११११९ ॥
आहुट्ठ ईसं चंपि सुसीसं लोहु बचीसं बीरेसं ॥
हिंदुअ असुरानं षग्ग षिलानं बज्जि विनानं नीरेसं ॥
हक्कं हहकारं होइ हलारं ढहै ढलारं सहारं ॥
गज्जय चिक्कारं हय हिंसारं षुंदि षुरारं रुहारं ॥
छं० ॥ ११२० ॥

(१) ए० कृ० को०—घर।
(२) ए० कृ० को०—सनै। (३) मो०—रुच।

कड़ क्कंधे कंधं सध उसंधं तुट्टि दुरंध भयकारं ॥
उर श्रोनं दडकं हड्डुकडकं षग्ग कनकं षैकारं ।
गज्जहि रन सूरं बिर विरूरं अच्छरि हूरं बजि तूरं ॥
रत्ते रन चारं देषि दुआरं रज्जि उरारं ओपूरं ।

छं० ॥ ११२१ ॥

झेंकी फिकारं गिद्धझुरारं सिद्ध मुदारं जैकारं ॥
कट्टे फर ऊरं अंत अदूरं डिंभरूरं भैकारं ।
आयौ गजि मानं हनि जिहानं मीर त्रिहानं दिषि पानं ॥
जै जै विज्जित्तं हरी सुइंतं कढि क्रवत्तं कृप्पानं ॥

छं० ॥ ११२२ ॥

गेजे असि घातं सूर सुभातं बाहु दुबातं दुझझारं ॥
तुट्टे मझ्झारं दुझझारं सारं कंठ उझारं हसि हारं ॥
जग्यौ जम दट्ठं घाव पहट्ठं धारह डट्ठं बरि बीरं ॥
मुत्तिय चलि राहं सूर सुढाहं भौदिव राहं दुहीरं ।

छं० ॥ ११२३ ॥

जुद्धं जुद्धानं षत्त फट्टानं तीर रसानं सध्धानं ॥
कविचंद कहानं कित्ति बषानं उभै पुरानं बक्खानं ।

छं० ॥ ११२४ ॥

ग्यारहों मीरों और सरदारों सहित रावल जी का खेत रहना।

कवित्त ॥ एसिस संइ दह एक । सत्त परि रावर सिंघं ॥
उद्ध जुद्ध उद्धरे । इक्क एकं रजि रिंघं ॥
रतन सिंह अर सिंह । सिंह तेजस्स समथ्थं ।
बीर देव बानैत । करै प्राक्रम्म अकथ्यं ॥
अरिजुन्न जेम अरजुन्न करि । सामंत तिंह हुब्बे[1] बरन ।
साजैति सूर भेदे वरह । षल अनंत षुट्टे व तन ॥

छं० ॥ ११२५ ॥

गाथा ॥ सहस च्यार सधि मीरं । निवडे विषम नंद बिय सत्तं ।

(१) मो०—दुब्बे वे बरन

नद्दे पलचर श्रोन । हालाहल विति विष माइ ॥
छं० ॥ ११२६ ॥

जामराय जद्दव का हरावल में होना ।

कवित्त ॥ हालाहल बित्तयौ । गिद्ध जंबुक कोलाहल ॥
रगत बुंद निभ्भरहि । अंत डबर[1] डोलाहल ॥
बार ग्रार गुन धुक । हक श्रवन भक झाइय ॥
हो बलिभद्र सुभद्र । सिंघ रुक्यौ रन साइय ॥
संग्रम्म बत्त रम्मिय कहै । लग्गै गत्त दुहाइयां ॥
गोडनह[2] गरुम गोरी घटा[3] । सु जद्दव तेग उचाइयां ॥
छं० ॥ ११२७ ॥

तब रन रत्तौ बलिभद्र । राइ पावस पग लग्गौ[4] ॥
तु धीर जा धीर । भीर रावत[5] ते भग्गौ ॥
हों ढोली ढाल । ढाल कढ्ढौं सुरतानी ॥
कढ़ गुज्जर दाहिम्मा । बोल बढ्ढ उरतानी ॥
प्रारम्भ सव पज्जून सुअ । बड्डारू बंटै भरां ॥
असवारं सनाहरू सख्च । बे बंधव बंटै घरां ॥
छं० ॥ ११२८ ॥

शाही फौज में से सुभान खां का धावा करना ।

लग्गैं बुध्घ[6] विश्राय । पच्छि जद्दव दव लग्गिय ॥
हय गय नर आरुरिय । भररि गोरी घर भग्गिय ॥
पग छुट्टत पतिसाह । षान षाना षुरसानी ॥
हिंदवान की हद्द । बोलि अग्गें सुरतानी ॥
सिरदार सिंधान निसान पति । सुविहान असमान मति ॥
हों हल्ल गहों चहुआन कों । तौ पठान अग्गिवान पति ॥
छं० ॥ ११२९ ।

(१) ए० कृ० को०—अंवर ।
(२) ए० कृ० को०—गोडन्नह । (३) ए० कृ० को०—सुघर ।
(४) ए० कृ० को०—लग्गै । (५) ए० कृ० को०—रावर ।
(६) मो.— बुब्बे बे ग्रनां ।

जामराय जादव और सुभान खां का युद्ध।

त्रिभंगी ॥ लहु[1] गुरु छह सत्ता तेरह मत्ता एहा अष्पिर[2] अंदोई ॥
षगपत्ति सुनंदा नाग भनंदा त्रैभंगी छंदा एदोई[3] ॥
कूरंभा बाले संमर झाले सिंधुर ढाले उच्छाले ॥
गोरी घर घाले[4] असु करि ढाले परि बेहाले तब लाले ॥
छं० ॥ ११३० ॥

बर धरि सुलतानं से षुरसानं तरतुरकानं भुज भानं ॥
डह डह नीसानं बज्जि दुआनं असि झंझानं उन्भानं ॥
जद्दव आमानं कहि धरि ध्यानं गहि गैबानं सुरतानं ॥
सुनि सुनि सबिहानं बक्किय आनं तेग उचानं असमानं ॥
छं० ॥ ११३१ ॥

बहु मिलि मरदानं झरझर घानं असुकिय ढानं परधानं ॥
आवध तुटि तानं मिलि बथ्थानं जानिं बिनानं मल्लानं ॥
धम धम्म लतानं बहु रंग नानं[5] राजा मानं सु बिहानं ॥
तरकिय तष तानं नह[6] सितपानं दूहसि रिसानं तिरुझानं ॥
छं० ॥ ११३२ ॥

कवित्त ॥ हूक सबद उच्चार। सुन्यौ जद्दव जुआनै मन ॥
मनहु मेघ गरजहि दिसान। नीसान सुहम[7] घन ॥
रन छीतर तोषार। हरसि हालाहलि दिट्ठौ ॥
भन्नौ कुमुद मुद्दयौ। चंद लग्गौ नह मिट्ठौ ॥
भरभार कीर कूरंभ कर। कमल अमल मुष उच्चरयौ ॥
बिधि जुद्ध रुद्ध सांइय सधन। सुगद[8] गिद्ध मिट्ठौ चरयौ ॥
छं० ॥ ११३३ ॥

दूहा ॥ रवि चक्का चक्की चरन। दिठ लग्गिय असजोई ॥

(१) मो.-लघु। (२) ए. कृ. को.-अच्छिर।
(३) ए. कृ. को.-बिज्जूमाला छंदोई। (४) मो०-काले।
(५) ए, कृ. को.-नालं। (६) ए. कृ. को.-तह। (७) ए. कृ. को.-मुहम।
(८) ए.-सुगंद।

गहर करै सिद्ध तिय मन। घन रष्षै नब लोई ॥

छं० ॥ ११३४ ॥

कवित्त ॥ उए सेन आलम्म। आय आलम संपतौ ॥
ए हिंदू आलंम। आय जैदु पर हहक्कंती ॥
हुए उए अंकुरिय। घरिय लज्जी भर भंभर ॥
नरे नरां बित्तरिय। हरिय जम्मन आवन धर ॥
रन राम दुजोधन भर भिरन। बालमीक व्यासह करिय ॥
हुए न होंहि हिंदू तुरक। मुगति मग्ग बित्तिय घरिय ॥

छं० ॥ ११३५ ॥

जामराय जादव का खेत पड़ना।

पर्यौ षेत परि जाम। लियौ धर साहस भोलिय ॥
तहं आयौ बलिभद्र। षग्ग षेलत रस हौरिय ॥
असिवर झोड़न झारि। तार बज्जंतं चिघाइय ॥
परि पथ्थर अगवान। थान थर हीय थराइय ॥
भभि ढाल धरिगे गोरी गरुअ। मुच्छि बहुरि जग्गिय घरिय ॥
बलिभद्र जुद्ध दिष्षौ करत। हनौ हनौ[1] अप्पन करिय ॥

छं० ॥ ११३६ ॥

पज्जूनराय के पुत्र बलिभद्र राय का धावा करना।

बलिभद्रह आगमन। पुट्टि नवं आय महाभर ॥
समर सीह सेवंज। लहै लज्जिय अद्व हर ॥
सिंघ राव सांषुला। रोव पूरन परिहारह ॥
पंति पहार सारंग। वेन बघेल सुभारह ॥
देवरा राव सारंग समथ। षीची हर देवह सुहर ॥
चालुक्क बीर डोडह रतन। तोंवर सागर तेग तर ॥

छं० ॥ ११३७ ॥

नौ सरदारों का बलिभद्र राय की सहायता पर उतरना।

नवै सुभट बै नुत्तं। गात उत्तंग तेग गुर ॥

(१) ए. कृ. को.-हनों आप-अप्पन करिय।

कुल अरेह सुषदेह । जइ उद्धरिय केय धुर ॥
स्वामि ध्रम्म समरथ्थ । अथ्थ बर हथ्थ प्रचारन ॥
अगम मग्ग ननचहै । धार पय तिथ्थ सुधारन ॥
दिष्यौ सुराज प्रथिराज तिन[1]। करन अप्प[2] रिमैहर कचर ॥
[3]अनु नंमि सीस असमान लगि । आय प्रचारिय तेकं भंर ॥
छं० ॥ ११३८ ॥

बलिभद्र के मुकाबले में जलाल जलूस का आना और दोनों का खेत में पड़ना ।

मोतीदाम ॥ समैं तिन सथ्थ बलीभद्र बीर । लगे अरि सौं असि तेग तरीर ॥
सनंमुष आय जलाज जलूस । तंतारह बंध जुरे तन जूस ॥
छं० ॥ ११३९ ॥

रचे सथ पंच सु सथ्थिय मीर । तरक्कस नंषि कमानस तीर ॥
धरै कर षग्ग उनंगिय ताम । अगें पर पुट्ठि सुधारिय काम ॥
छं० ॥ ११४० ॥

करै असि हंषि बलीभद्र बीर । मनों मधि दंतिभ गज्जि कंठीर ॥
संभारिय अप्पन इष्टह संभु । तरक्कि बढ्यौ बल सायर अंभु ॥
छं० ॥ ११४१ ॥

धरी बर उज्जन उत्तर-षान । झनंक्किय दच्छिन षग्ग त्रिलान ॥
मच्यो तन मार करीर असंभ । निरष्षहि आतुर उप्पर रंभ ॥
छं० ॥ ११४२ ॥

बलीभद्र हक्कि हन्यौ न्रप कंन । चंपे कजि उप्पर वाह विधंन ॥
चले भर सथ्थ गहक्कि जुनब्ब । करन्नह उप्पर आतुर रब्ब ॥
छं० ॥ ११४३ ॥

तिनं बजि आवध रीठ अपार । कटक्कट लग्गिय सोर करार ॥
कटै धर सीस बिसंधह संघ । तुटै पय पानि सु जानि बिरंध ॥
छं० ॥ ११४४ ॥

(१) ए. कृ को. तन । (२) ए. कृ. कों.-क्रित अपरि ।
(३) ए. कृ.को. नमि सीस राज लगि गैनंतर, आय प्रचारिय ठेकझर ।

प्रलक्कहि सुभ्भर स्रोन प्रवाह । पलम्भय सीस स्रिगुद्द गुराह ॥
बलीभद्र पारस एक पठान । कन्यौ अप लष्पि जमालन ठान ॥
छं० ॥ ११४५ ॥

धरष्पि जमाल कमान करूर । हयौ तिनकै बर कूरंभ उर ॥
सनंमुष षंपिय अश्रवप जून । ग्रहे तन मंडिय षोनिय षून ॥
छं० ॥ ११४६ ॥

नष सिष भंजिय हड्डरू मंस । करै धर नंषिय पिंडन श्रंस ॥
दिये तब तम्मिय ताजन षान । भगन्निय युत्त ततारह मान ॥
छं० ॥ ११४७ ॥

हहक्किय धक्किय धामिय ताहि । पर्यौ दिषि बंधव लग्गिय दाह
सनंमुष सारिय भारिय षग्ग । पर्यौ बलिभद्रह सीस अलग्ग ॥
छं० ॥ ११४८ ॥

हयौ बिन सीस असीवर भाक । पर्यौ सिर सथ्थह तुट्टिय साक ॥
बिना सिर षष्षिय धामिय बीर । परे सय दून सुहथ्थिह मीर ॥
छं० ॥ ११४९ ॥

घरी दुश्र केलि करी सु विसंम । सिरप्पर नंषिय देव कुसंम ॥
छं० ॥ ११५० ॥

गिद्धिनी का संयोगिता प्रति संबाद बर्णन ।

कवित्त ॥ पर्यौ राव बलिभद्र । भ्रभिभ धर अग्गर सांइय ॥
गय रवि मंडल भेदि । जोति हर जोति सहाइय ॥
परे मीर सें तीन । परे षट सुभ्भर राजह ॥
थित्त सु राकर सिंघ । लगी उर अच्छरि साजह ॥
सुभट च्यार सों राज रहि । गहकि भग्गि आलम्म भर ॥
गिद्धिनिय कहै संजोगि सुनि । धनि सु जुद्ध तुश्र कंत गर ॥
छं० ॥ ११५१ ॥

दूहा ॥ समर सिंघ भर जुद्ध परि । अनी बाम दिसि भंजि ॥
ता उप्पर पुंडीर गजिं । हनन मीर धर सज्जि ॥
छं० ॥ ११५२ ॥

कवित्त ॥ परे विषम पथ्थार। बीर पावस गुर गज्यौ ॥
गाजी षांन गहंति। बंधि सो साहिब सज्यौ॥
उभै सहस भर मीर। सहस पुंडीर सहत्तौ ॥
विषम बीर उभ्भार। उभै लग्गै उत तत्तौ ॥
झर झार धार लग्गिय विषम। सिर धरि षत पुन पूर धर ॥
तुट्टंत असिय उट्ठै अलग। मनों घन दीमिनि दंपि झर ॥
छं० ॥ ११५३ ॥

गाजी खां और पावस पुंडीर का द्वन्द्व युद्ध। पावस का मारा जाना।

पद्धरी ॥ लग्गे सु घाव पुंडीर मीर। जग्गयौ विषम रसरुद्र बीर ॥
कट कटी षग्ग लग्गे विरूर। आलरे बीर गाजंत सूर ॥
छं० ॥ ११५४ ॥

गाजीय षान पुंडीर बोलि। उत्तंग गात गरुअत्त तोलि ॥
चयभाग संगि तोलौ सुबीर। मनु मिले सिंघ गर्ज्जे गुहीर ॥
छं० ॥ ११५५ ॥

बिकसे नयन मिलि मुंछ मोह। भ्रकुटी सु सीस मिलि जम्म जूह॥
उट्टिय सु बीर बंबरि दुआन। चिकुटीय साज्जि कारूर कान ॥
छं० ॥ ११५६ ॥

सुष रत्त स्रोन बिंबह सुनेन। जंपेय उभय भर उंच बेन ॥
देउ स्वामि ध्रम्म रत्ते सुराह। उच्चरहि आन दुअ ईस दाह ॥
छं० ॥ ११५७ ॥

मुक्किय जु संगि उन्हैं उनाह। लग्गिय सुउप्पर फुट्टिय पराह ॥
चल्ले सुसंग बर बीर दून। असिझाक सीस तुट्टे सजून ॥
छं० ॥ ११५८ ॥

सिर परे दून लग्गे सुवथ्थ। चंपयौ षान गाजी सुहथ्थ ॥
नष्षो धरनि गाजी सुषान। संमुहै सूर धायौ परान ॥
छं० ॥ ११५९ ॥

बिन सीस हंरासे तीन मीर। धर ढर्‌यौ धरनि सा सुतन धीर ॥

भनि धंनि सबद उंट्ठे अयास। आकम्म देवि देषे सुरास ॥
छं० ॥ ११६० ॥

इन किये जुद्ध चय दून वार। पहिल की संख कौ गिनै वार ॥
हाहुलिय राय कौ जैत वार। सुरतान सेन कौ पयंकार ॥
छं० ॥ ११६१ ॥

चहुआन पान कौ रष्षवार। धर पर्यौ स्वामि कौ' षत्त फारि ॥
धीरंजधीर कीनौ प्रमान। भावी विगत्त मन चाहुआन ॥
छं० ॥ ११६२ ॥

दूहा ॥ अदिन राज लच्छिनं मने। जब छीजे बर सत्त ॥
कै अनीति राजन करै। कै बल छंडै चित्त ॥
छं० ॥ ११६३ ॥

कवित्त ॥ परत राइ पुंडीर। मीर बज्जे बहु बज्जे।
मंनहु भद्रि पद एन। ऐन गेना घन गज्जे ॥
अचल चमू चतुरंग। कृष्पि कुप्पार अपारह ॥
असिनि भरनि बर अतर। षग्ग कर दंड सपोरह ॥
जै जै चवंत चंद सुरं नर। बरनि बरनि अच्छिर छरनि ॥
भव भाव भवम हुम छय तजि। बसि पावंस आवस धरनि ॥
छं० ॥ ११६४ ॥

रावर पारिवा का युद्ध समाप्त।

मोतीदाम ॥ ॥ पर्यौ धर पावस राइ पुंडीर। कियौ बर कासिवर भकरीर[१]
धरव्वर धार सुधार भरीर। सच्यो[३] करि मावस मत्त कंठीर ॥
छं० ॥ ११६५ ॥

तिलं तिल तेगहि बट्ठिनि मीर। भरै कुस मंगन अंगम भीर ॥
नचै धर सीस अते धर बीर। नचै धर सीस अते धर बीर ॥
छं० ॥ ११६६ ॥

बजै मृदु मद्दल आनक भीर। हलज्जल सैल लरत्त तथीर ॥
गजै गज बाजि बजै तम तीर। छयं रवि आरथ पारथ बीर ॥
छं० ॥ ११६७ ॥

(१) ए० कृ० को०-सों। (२) ए० कृ० को०-गरीर।
(३) ए० कृ० को०-मच्यो।

परै षग खग्गत बंध्यनि हीर। जरैं जनु मल्ल महा भर पीर ॥
टगट्टगं चाहत तुंडन खीर। गिळे झलि गंग उदद्धि सुनीर ॥
छं० ॥ ११६८ ॥

हकै हक हक सुकातर ईर। झुकें झुक कुंतनि झुक झुकीर ॥
भकें भक रत्त निषत्त भकीर। धुकैं धुक धुक उभ्भभाकि उभीर ॥
छं० ॥ ११६९ ॥

परयौ घन षान उषान उथीर। कटे धट घुम्मद्दि मीर सुपीर ॥
सुजद्दर हैदरषान दरीर। मुरयौ मप्रिषांदस पेंड अरीर ॥
छं० ॥ ११७० ॥

षहै षुरसानत कित्तकि तीर। भरे असु सध्य तन धर भीर।
* * । * *॥
छं० ॥ ११७१ ॥

दूहा ॥ परिविसि निसि पत्तिनं उदै। ठठुकि सेन दुअ दीन।
सहैस एक आहुट्टि परि। मन न छीन तन छीन॥
छं० ॥ ११७२ ॥

तजि सुनेह संकित सयन। थान थान रहि भीर ॥
प्रात तार से दिष्षियै। जोध जोध बर वीर ॥
छं० ॥ ११७३ ॥

कवित्त। भयत भौति निसि अद्ध। मेघ डंबर दिसि छाइय ॥
विषम बाय बर बज्जि। भूत बेताल चिघाइय ॥
बज्जि घाय रन हक्कि। करै नारद किलकारिय ॥
गिद्ध सिद्ध जोगिनी। मंझि काली दै तौरिय ॥
बर बीर भद्र नच्चै तहां। धक्कि हक्कि दैकर फटै ॥
अच्छरिनि गौन गावै उमा। चित्त रूर उढै भटै॥
छं० ॥ ११७४ ॥

बीर भद्र अरु वीर। जीति जालपा जलप्पिय ॥

(१) ०कृ० को०—तरी दै कारिय।

कहौ बीर बेताल । सूर सामंत कलप्पिय ॥
कहौ बीर संक्रमन । बीर संनि ज्यौं रनं मंड्यौ ॥
को हिंदू दल जानि । गयान दिन एक न षंड्यौ ॥
आरिष्ट राह झंपै रविहि । चंद जोति चहु दिसि द्रवै ॥
ग्रहं मौल लोह बंदै नही । नीर मंझि रष्षै हवै ॥

छं० ॥ ११७५ ॥

दच्छ बंध कुब्बेर । नाम सुव्वेर सु ब्रीत्तिय ॥
तुंम सह कंदल कल्यौ । सूर सामंत कलप्पिय ॥
के मनु छिंदनु रूप । भूप यंबरि करि उंट्ठिय ॥
किम अरि आवद्ध । संगि बाना बलि फट्टिय ॥
किम क्रिम सु षग्ग पंजर वह्यौ । किम सुराह गह गह गुह्यिं ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवहि । दच्छ राज अच्छौ कहिय ॥

छं० ॥ ११७६ ॥

कै इन्द्री बल सूर । गुरू ग्यांहौ सनि तीजौ ॥
नोंम सुक्र विन सुक्र । जनम मंगल बुध बीजौ ॥
राह केत सुष रष्षि । विप्र दच्छिन हरि चिंतिय ॥
जोति चक्र जुध चक्र । दुष्ट दानह करि मित्तिय ॥
चय चिपुर जीति चिपुरारि हुअ । षलनि मद्धि रष्यौ तिनहि ॥
ग्रह ग्रहनि गंठि पूजै पुहप । सुषहु जुद्ध जीते षिनहि ॥

छं० ॥ ११७७ ॥

दुतिया सोमवार का युद्ध वर्णन ।

मुरिल्ल ॥ वाम अनी कदल सौं वीत्यौ । प्रती पद आदित्य अतीत्यौ ॥
सोम दिनह दुतिया तिथ रच्यौ । दाहिन कलह सुकंदल सज्यौ ॥

छं० ॥ ११७८ ॥

निसा भई आक्रम्मि सुसेनं । दल बल अप्प अप्प मिलि एनं ॥
फुनि सामंत सेन बर गज्यौ । दिच्छिवंध[1] कहनह को सज्यौ ॥

छं० ॥ ११७९ ॥

(१) ए०—दिसी बध ।

दूहा। अति आतुर जित्तन असुर। अरु जित्तन सुर लोक॥
प्रतिपद रवि निसि यौं गई। ज्यों रस रमनी कोक॥
छं०॥ ११८०॥

दोनों सेनाओं का दुतिया के प्रातःकाल का मेल॥

भयत प्रात निसि मुदित हुअ। उदित सूर छिन मंझ॥
बीर बीर सम्मुह चढे। चाहुआन सुर तंझ॥
छं०॥ ११८१॥

शाही व्यूह का बल वर्णन।

कवित्त॥ सेत छत्र सिंदूक। सेत चामरन सेत धज॥
सेत धजा चाभरन। जुद्ध आवरन पाट गज॥
हेम मुत्ति गज झंप। दंत कल्लयंस कटारह॥
चवनि अंग झारहि। झनंक पायक पुंतारह॥
सुरतान अग्र षुरसान षां। षां अग्गे मद्दह सरक॥
दुअ वाह सेन सन्नाह बनि। मनु पच्छिम उग्गौ अरक॥
छं०॥ ११८२॥

राजपूत सेना का व्यूह बल वर्णन।

सेत छच नौताय। जैत उभ्भौ दिसि बांई॥
चाव चलन चित धूअ। धूअ रष्षन चित सांई॥
दिसि दच्छिन चावंड। पाय मुक्के सिर नग्गा॥
समर सिंघ रावर नरिंद। साहि रुक्के रन अग्गा॥
सुरतान छच पावार परि। चतुरंगिय चंपिय सघन॥
आवत्त रत्त दुनियां विषम। द्वैवरथ्थ बंधे गगन॥
छं०॥ ११८३॥

दूहा। उन जीते जित्ते तुरक। उन भज्जे भज्जाइ॥
उररि सेन पम्मार परि। सेत छच नेताइ॥
छं०॥ ११८४॥

कवित्त॥ तब हाइ हाइ आरिष्ट। दिष्ट चामंड अंबारिय॥
रे जद्दव वग्गरिय। राम कूरंभ संभरिय॥

षीची राव प्रसंग । सोधि पावस पुंडीरह ॥
अप्प अप्प सुष छंडि । जाय भंज्यो भर भीरह ॥
न्रप जैत राय उब्बर करन । दुई दुबाह दाहर तनय ॥
तिरछौ सुतक्कि लग्गौ लरन । मनौ अग्गि जज्जर बनह ॥
छं० ॥ ११८५ ॥

चामंड राय के मुकाबले पर गाजी खां का उतरना ।

दूहा ॥ बिषम सरुच सुरतान दल । बल प्रति बज्जौ धाय ॥
जैत छुच सित ऊपरें । तुरी बज्ज बर साय ॥
छं० । ११८६ ॥

कबित्त ॥ एक सूर सामंत । दंत दंती उप्पारिग ॥
सिंध हक्कि गय सिंघ । अब्भ लगि षग्ग उपारिग ॥
सुब्बल सोम नंदनह । रत रावत्त बिरुद्धौ ॥
अति करकस जु कुमंध । चित्त कौ रहे जु सुद्धौ ॥
भर हरिगुं षान षंधार लषि । बर बिरुद्ध दाहर तनय ॥
बिब्भार हंस धर सिर जुरन । सुकलं किन्ति सुर बर सुनय ॥
छं० ॥ ११८७ ॥

चामंड राय का विषम युद्ध ।

रसावला ॥ मेछ हिंदू दलं । हाल लग्गी दलं ॥ बीरबीरं बुलं । सीस हक्के चलं ॥
छं० ॥ ११८८ ॥
अंभ कौतूहलं । जोग जोगं गलं । षान छुल्ली षलं । छच पत्ती चलं ॥
छं० ॥ ११८९ ॥
घोर मूरं मलं । उड्डि लग्गी कलं । काज साई छलं । दीन दोई दलं ॥
छं० ॥ ११९० ॥
हाय हालं बुलं । दाहि दाहि मलं । उंच साहीयलं । मिच्छ किन्ने तलं ॥
छं० ॥ ११९१ ॥
दोय दोयं डलं । मेछ हिंदू यरं । एक एकं गरं । भारि बड्ढं करं ॥
छं० ॥ ११९२ ॥

कारिजा कण्फरं । गेन लग्गा वरं । गिद्धि जाला जरं । रोमि नंचे धरं ॥
छं० ॥ ११९३ ॥
सीस इक्का करं । दंति दंत सरं । अंत आलु भझरं । इम्भ सोहै परं ॥
छं० ॥ ११९४ ॥
माल कट्टै सरं । ढाल पौलं परं । केलि साषा ढरं । बीर सू बंबरं ॥
छं० ॥ ११९५ ॥
जानु कट्टै परं । कंध बंधे भरं । ताल बज्जे हरं । सट्टि कंठे तरं ॥
छं० ॥ ११९६ ॥
पंच पंचं घरं । मुत्ति लद्धी नरं । राइ चामंडरं । बीर गोरीभरं ॥
छं० ॥ ११९७ ॥
मुक्ति लद्धी भरं । पंथ बोली दरं । रुद्धि नद्दी षलं । पंक पंनं पलं ॥
छं० ॥ ११९८ ॥
साहि साहं गलं । असिय भलभलं ॥ .... । .... ॥
छं० ॥ ११९९ ॥

कवित्त ॥ झलकि सेन सुरतान । कलकि हिंदू कर बज्जिय ॥
सार धार आकुत । बाज राजह तुटि तज्जिय ॥
स्वामि मंस है मंस । सानि संकट किय एकं ॥
खोयि हथ्थ सें पंच । नेह कानी निजु केकं ॥
निज भृत्त निरष्षत सघरिय । राज रजोइअ अंघरिय ॥
संग्राम धाम तुट्टिय सकल । साग सुनाई पंघरिय ॥
छं० ॥ १२०० ॥

पहकि पंति पंषिनिय । हकि मंकिनिय सुञ्चो रुअ ॥
जहकि जच्छि अच्छरिय । कहकि अच्छरीव सु हरुअ ॥
हजकि जग्गि जोगिनिय । रहकि रुधि रंग सुरत्तिय ॥
दहकि मंस जंबुकिय । हलकि सिद्धिनि असु बत्तिय ॥
धर नरन हरन हिंदुअ तुरक । अरक मझ चामंड किय ॥
दव दिट्ठि मिष्टि सारह सरस । सुकल कित्ति कलजुग्ग जिय ॥
छं० ॥ १२०१ ॥

दूहा ॥ लगि गोरी चहुआन सों। भरे रुधिर जल पूर ॥
बहु दल अरि तन गंजि कै। तिन संघारिग सूर ॥
छं० ॥ १२०२ ॥

जैतराव का घोड़े पर सवार होना।

चढ्यौ जैत है मंगि कै। थप्परि कंध सुपानि ॥
दल सुमिच्छ तिल तिल करन। करि जुहारं चहुआन ॥
छं० ॥ १२०३ ॥

चामंडराय की वीरता का बखान।

कवित्त ॥ ऐ सांहस सातरह। करिय पावरह आनं ॥
लष्ष दलह मिलि गयौ। कियौ साहस अंजानं ॥
लत उलत्तं षिलंत। धार उद्धार षिलंतह ॥
सिर तुट्टै संमुहौ। भिरयौ कमंध सिर बत्तह ॥
सिर तुट्टि सुधर संभौ भिरयौ। धर कटंत सिर विप्फुरिय ॥
बिन सीस सहस्र अंध पारि रन। इम सु केलि कासिम करिय ॥
छं० ॥ १२०४ ॥

रसावला ॥ षग्ग षोले षनं। ताहि गोरी अनं। जैतछ्च तनं। अंबुआ रायनं ॥
छं० ॥ १२०५ ॥

मेछ भंजे जिनं। अद्ध अद्धे तनं। षाह वाह घनं। रुंड मुंड बिनं ॥
छं० ॥ १२०६ ॥

षेलिता लभ्भनं। पेषि रुाचं मनं। उक्क लग्गी वनं। दुष्षि योरीयनं ॥
छं० ॥ १२०७ ॥

बंदि बंदै लिनं। लोक लोकं गनं। मग्ग मग्गे सनं। जोग मग्गे जनं ॥
छं० ॥ १२०८ ॥

षग्ग लग्गें छनं। देव पचीयनं। स्वामि छुट्टे रनं। श्रोन रेनं पनं ॥
छं० ॥ १२०९ ॥

पिंड सारे घनं। सूर भिरितं यनं। कब्बि चिंचं किनं। बंद बंदाइनं ॥
छं० ॥ १२१० ॥

देव बरदायनं । गरुत्र गोरी सनं ॥..........।........॥
छं० ॥ १२११ ॥

कवित्त ॥ भिरि भारथ दाहिम्म । छुट्टि रन चौय प्रकार ॥
मात पित्त अरु स्वामि । बाच मन क्रम्म सुधारं ॥
बेद मग्ग उथ्थापि । मग्ग थप्प धर धारं ॥
जोग मग्ग लम्भैन । क्रम्म नष्पै भरतारं ॥
आवत्त जुद्ध गिरि जुरिग[1] भर । भिरिग सूर सामंत नर ॥
षग षित्त षगिग दोउ दीन बर । चढ्ढि भंति बर विप्पहर ॥
छं० ॥ १२१२ ॥

दो पहर होने पर जैतराव का हरावल सम्हालना।

बर विपहर समान । जैत रुधयौ गज गोरिय ॥
दुइ दुबाह पावार । बज्रपति बज्जइ जोरिय ॥
दंति अंति आघात । तंत जरि मंच भ्रमाइय ॥
कंवल पीर ज्यौं कन्ह । दंति गावहि रुकि धाइय ॥
प्रथिराज बीर उप्पर करन । सिंह समर सो रंग भर ॥
बर बिषम तेज घन छांह छल । हक्कारयौ[2] बर वीर बर ॥
छं० ॥ १२१३ ॥

मियां मनसूर रुहिल्ला और चामंडराय का द्वंद युद्ध। दोनों का स्वर्गवासी होना।

मोतीदाम * ॥ सबै दल गज्जन वै सुरतान । हलक्कि गहन्न चढ्यौ चहुआन ।
बजावति नौबति सिंधुअ राग । देवासुर कंकं मनों फिरि लागि ॥
छं० ॥ १२१४ ॥

छुटे हयनारि तुवक्क जंबूर । पिवै जनु बीज गरज्ज गरूर ॥
बगत्तर पष्षर टोपन थाग । बचै किमि सिप्पर उप्पर लागि ॥
छं० ॥ १२१५ ॥

कबूतर ज्यौं धर लोटन लोटि । परै चतुरंगिनि एकहि चोट ॥

---

(१) ए० कृ० को०—भरिग ।
(२) कृ० ए०—बिचारिय, को०—उचारिय । *यह छन्द मोतीदाम मो० प्रति में नहीं है।

मुचै भय भीति प्रकारिय बार। भयौ तब संभरि वार किंवार ॥

छं० ॥ १२१६ ॥

सहस्सह च्यारि गिरै असवार। नय्यौ हय दाहिम बग्ग उपारि ॥

झलंमलि लोह अनी इक मेक। हयग्गय पाइल पारि अनेक ॥

छं० ॥ १२१७ ॥

बही असि कुंत सरंजम दट्ठ। धरातर मंस घरं चक चट्ठ ॥

भ्रमक्कत स्रोन चले परवाह। मनो नदि पावस मास अथाह ॥

छं० ॥ १२१८ ॥

चमू असुराइन चौसठि पग्ग। दई सुत दाहर ठेलि अलग्ग ॥

जहाँ जहं आइ पर्यो नृप भार। तहां तहं पारष हथ्थ दिषार ॥

छं० ॥ १२१९ ॥

गहक्कह सेन करंतह चूर। दिष्षी मफरह मियां मनस्सूर ॥

चवद्दह से तजि अस्व रुहिल्ल। धरै कर सिंगिनि साइक षिल्ल ॥

छं० ॥ १२२० ॥

कटिं कस कंध भुजा उर थूल। सधं तस पाइक वह अभूल ॥

क्रम करि साहिब दीन सलाम। गहे मन बेगम लुट्टि विराम ॥

छं० ॥ ११२१ ॥

कहैं मुष जीवत लेंहु सुबद्धि। लंकापति जौं हनुवंत उदद्धि।

निजै मन आगम जानि मरन्न। पनंगम पागर काटि चरंन ॥

छं० ॥ १२२२ ॥

उपानह छंडिय चांवंड राइ। पवन्नह वेग जवन्नहै धाइ।

जिन पथ भारत पार उतारि। तिंनं हरि कौ उर ध्यानं सुधारि ॥

छं० ॥ ११२३ ॥

करे किलकार प्रकारिय संग। फुटी मुफरह हियै अरधंग ॥

करिष्षि कमाम तज्यो सर मीर। लग्यौ उर मध्य कैमासह वीर ॥

छं० ॥ १२०४ ॥

तिने मनस्सूर पहुंचिय आय। छलंकरि पिट्ठ कियौ असि घाइ।

कटे सिर दाहिम कट्टिव षग्ग। हयौ मनस्सूर पर्यो कटि भग्ग ॥

छं० ॥ १२२५ ॥

दुसी कर मंडि सुभै किरवांन । जिसी सुतद्रोन कौं दी सिवदान ॥
रह्यौ धब जीव सहाब कि ओर । धकें परि सिंधुर ढाल ढंढोरि ॥
छं० ॥ १२२६ ॥

हिल्यौ पहिलं गज मारन राज । ढहावत सोव गयंदन आज ॥
गए घर कट्ठन राजन लोह । खरै इन भंति सुन्याय ससोह ॥
छं० ॥ १२२७ ॥

कौमंध कियौ घपि ऊधम एम । मगौं फरसी हर अंधक जेम ॥
करें असतूति घरे दुइ दीन । रिनंभद चढ्ढि अछक सुपीन ॥
छं० ॥ १२२८ ॥

मिले रिन अंगन बीर बिताल । घुसी छोइ नारि बजावति गाल ॥
दिषे कढि कौतिग कोरि तेतीस । अपच्छर ईस कि पूरि जगीस ॥
छं० ॥ १२२९ ॥

अवट्टिय तुट्टिय संषह पूरि । अपुट्टिय फौज फिरी सब सूर ॥
घमं घन जंगन के जितवार । तिनं तिनं सुम्भर पारि पयार ॥
छं० ॥ १२३० ॥

संघारिय भारिय गोरिय सेन । सकयौ नह कोइ सुभोरिय सेन ॥
करे घन उप्पर जैत पवार । दुअंतिय बार बजाइ कें सार ॥
छं० ॥ १२३१ ॥

चवद्दह सें कटि षेत असंद । पर्यौ धर दाहिम जंपिय चंद ॥
छं० ॥ १२३२ ॥

कवित्त ॥ च्यारि सहस असवार । मंडि चामंड दहिम्मौ ॥
चौदह सें मफरद्द । मियां मन सूर रुहिल्लौ ॥
हह हक किलकार । सीस तुट्टहि धर धावहिं ॥
आनंदित अपछरा । आज इच्छावर पावहि ॥
चांवंड राइ दाहर तनय । हर हारावलि लठ्यौ ॥
मफरद्द षान पीरोज सुअ । तेजवंत भिस्तिहि गयौ ॥
छं० ॥ १२३३ ॥

जैतराय का वीरता के साथ काम आना ।

पर्यौ जैत पांवार । ऊच नीचै छिति पूरिय ॥

ढाहे मीर मसंद। पंति पष्षलि[1] परि नूरिय ॥
सहस वीस इक्क ब्रन्न। सकल आसुर परि संथरि ॥
हड्ड मंस कट्टवमु। श्रोन गूदह तथ्थं करि ॥
किलकंत जुथ्थ जोगिन नची। रची रुथ्थ अच्छरि बरी ॥
डहकंत डक्क सुर बीर हर। रजिय गन्न जंबुक ररी ॥
छं० ॥ १२३४ ॥

जैत के मुकाबले में ग्यारह हजार सेना के साथ शाह के भांजे का आना।

सजिय जूह साहाव। रौद्र बज्जी रिन संगिय ॥
परे पेषि पामार। पूरि असि छत्र उछंगिय ॥
यां ताजनं सा तप्पि। पेलि गज जीत समीं अरि ॥
देषि दिष्ट प्रथिराज। कोपि तन्ताम्म थरथ्थरि ॥
इक्क व अप्प उप्पर जवन। भिरन अप्प जंपै अटल[2] ॥
चंप्यो[3] सुं गज्ज राजन्न जुरि। ताहि सार सुष्षुंदि षल ॥
छं० ॥ १२३५ ॥

पद्धरी ॥ संभरिय राम ढिल्ली नरेस। दिधाय जोति उक्कसिन सेसं ॥
विस्साल बिंब सम प्रात रत्त। तम लखित लोंम सुष तेज तत्त ॥
छं० ॥ १२३६ ॥

थरकंत अहर फरकंत बांह। रोमंच अग मुक्कां उछांह ॥
उघघरिय भ्रकुटि त्रिकुटी करार। कोपे सुसार करं दड धार ॥
छं० ॥ १२३७ ॥

उप्पारि खग्ग उंभमारि षग्ग। सारथ्थ हंस सम स्वर अग्ग ॥
खूंरिमा मुंख्य हंकारि हक्क। न्रिघात जेम धावंत धक्क ॥
छं० ॥ १२३८ ॥

(१) ए० कृ० कौ०—सुष्पलि।
(२) मो०—अतुर।   (३) ए० कृ० को०—भज्यो।

हय छंडि दंति गहि दंत दंपि । सिर फेरनि षि उभभार झंपि ॥
हुअ हड्ड चूर धुर हंस गज्ज । धर नंषि छोनि ताजन्न तज्जि ॥

छं० ॥ १२३९ ॥

राजन्न षान ताजंन बंधं । भानेज साह साहाब संध ॥
नव सहस मीर सम आय गज्जि । आतस्स जानि आहुत्ति जज्जि ॥

छं० ॥ १२४० ॥

लग्गे सु घाव सम चाहुआन । घट घट्ट षग्ग गाजी षरान ॥
तुट्टति घाव जो सन्न होय । हल सूर सिलह होयं विभाय ॥

छं० ॥ १२४१ ॥

आसन्न युद्ध लग्गे अपार । तुट्टंत सुधर झर मुभभि धार ॥
उड्डंत स्रोन तंन उद्ध अत्ति । दव लग्गि जानि आयोस भत्ति ॥

छं० । १२४२ ॥

देखियन जुद्ध दावन दवेव । नच्चंत नच्चि नारद भेव ॥
राजन्न लग्गि राजन्न मुष्ष । चहुआन रज्जु संगी सुवष्ष ॥

छं० ॥ १२४३ ॥

धर धार धरनि राजं न झारि । दल भग्गि फारि मनु फुट्टि पारि ।
फिरि आय राज उप्परि पवार । अरि जित्ति राइ बुल्ले विचार ॥

छं० ॥ १२४४ ॥

जैतराव की मृत्यु पर पृथ्वीराज का दुःख करना ।

दूहा ॥ पर्यौ राव जैतह सु रन । पति अब्बू घन घाय ॥
सूर राय सोमेस सुत । करिय अप्प सिर छाय ॥

छं० ॥ १२४५ ॥

कुंडलिया ॥ हम दिय छच जुछांह कौं । तुम लिय संप मरन्न ॥
हम दुर्जोधन जोधभय । तुम कलि करन करंन ॥
तुम कलि करन करन्न । हंकि उठि सिंध सिंघ पर ॥
झर उझारि झंझोरि । तोरि गहि दंति दंत धर ॥
गौ वच्छां पर्मि मोह । दोह लग्गौ सुदाह कह ॥
कहै राज । थिरा । । छच हम दियौ छांह कह ॥

छं० ॥ १२४६ ॥

दूहा ॥ राजन अंबर छोरु करि । जैत प्रसंसन काज ॥
दिस्सो धर अग्गर इहै । जुझ्झै परयौ धर आज ॥
छं० ॥ १२४७ ॥

गवरि हार उच्चिग अवनि । पुच्छिय इच्छ प्रबंध ॥
भ्रमर सुमन सुपन कि समर । आपु सुनै कविचंद ॥
छं० ॥ १२४८ ॥

खीची प्रसंग राय का युद्ध के लिये अग्रसर होना।

कवित्त ॥ हस्ति पीत पष्षर यौ । पीत चांवर गज गाहिय ॥
पीत टोप टट्टरिय । लोह हय चष्ष सनाहिय ॥
सारि सिलह प्रज्जरिय । पीत बानावलि सोभित ॥
राज राव परसंग । पिष्षि झुझ्झै परिया भति ॥
तनसार धार घटि भार घट । अबुर लष्ष बर पंच सै ॥
अनभंग बीर आइय न्रपति । सौस नवाइय सत्त सै ॥
छं० ॥ १२४९ ॥

शाही सेना के राजा के ऊपर आक्रमण करने पर प्रसंग राय का युद्ध करना और मारा जाना।

गीतामालची ॥ बिंटयौ मीरं राज धीरं अस्स हीरं असिसयं ।
गज्जं सनूरं सूर सूरं सा करूरं कस्सियं ॥
उच्चे सुगातं मुषष रातं तेग तातं रोसए ॥
माते मसंदं असि वंदं सा गिरदं गोसए ॥
छं० ॥ १२५० ॥

बिंटयौ राजं मीरं गाजं सब्ब साजं संकुलं ॥
चौ अगतिं सैंनं गज्जिगेनं अप्प तेनं उज्जलं ॥
वज्जे सुबाजं सिंग राजं जेर नाजं जंगयं ।
जंगियो गोरी कल्ल पोरी जुद्ध रोरीं रंगयं ॥
छं० ॥ १२५१ ॥

गज्जौ सुप्रांन चाहुआन रम्म ढान रज्जं ए।
संभरी मीरं अप्प मीरं संगु हीरं गज्ज ए ॥
हक्क मसंढं लेहु बंधं राज सद्दं संक्रमे।
देषे प्रसंगं सूर अंगं जुद्ध अंगं उम्भ्रमे ॥

छं० ॥ १२५२ ॥

गज्जं मुराहं गज्ज गाहं रषै ढाहं रुज्जए।
बाहंत मीरं बंधि तीरं नेह भीरं जे जए ॥
लग्गे करारे अनी धारे षित्त षारे पग्गए।
बाजंत तारं षग्ग यारं जीह मारं जग्ग ए ॥

छं० ॥ १२५३ ॥

श्रोन प्रवाहं पुर गाहं राह राहं रम्सए।
मारंन षानं मीर मानं राजधानं धस्स ए ॥
देजे प्रसंगं संमु षग्गं आय अंगं अंग ए।
षाजे विहारं हार मारं रोहि आरं रिंगए ॥

छं० ॥ १२५४ ॥

सेखं प्रहारं अस्सि झारं सार सारं बज्ज ए।
झाक झरक्के धक्क धक्के दोय हक्के गज्ज ए ॥
प्रस्संग राजं बीर गाजं मीर साजं दुट्टए।
मल्हे प्रहारं तीन तागं झार झारं बुट्ठए ॥

छं० ॥ १२५५ ॥

षय बीर जुट्टे दुट्ठ दुट्ठे मिले रुट्ठे मत्तए।
वे हथ्थ षंडं हथ्थ थंडं तुट्टि रुंडं गत्तए ॥

छं० ॥ १२५६ ॥

दूहा ॥ दुने मीर षीची प्रसंग। सानि अन्नो अनमंस।
बाज षड्ड समुझि न परै। भयौ कीच पल अंस ॥

छं० ॥ १२५७ ॥

कवित्त ॥ परयौ राव परसंग। षग्ग षीची पुति पुत्तौ ॥
षीर मौर गजगाह। भार पारथ ज्यौं जुत्तौ ॥
से हथ्थे सें हथ्थ। गेन गंध्रव किय गानह ॥
वरन इच्छ धरम्मिच्छ। द्रोह श्रोनह किय पानह ॥
संभिरय राव संभरि धरी। सघन घाय सं मुह लरिय ॥
जिम जिम सुजुम्भिम धरनि परिय। तिमं तिम इन्द्रासन टरिय ॥
छं० ॥ १२५८ ॥

बग्गरीराय की वीरता और उसका पांच मुसलमान सरदारों को मार कर मरना।

मोतीदाम। परयो रन षीचिय राव प्रसंग। तिलंतिल बीर सुबंटिय अंग ॥
धुन्नी भय मेछ गहक्किय ठान। क्रमे फिरि कुंडलि राजनें ठान ॥
छं० ॥१२५९॥

घनं घन पष्षर पारस भीर। ढनक्किय घंट रनंक्किय तीर।
हनं हन सद्द सुबज्जिय हाक। धरद्धर बज्जिय[2] षग्गनि धाक ॥
छं० ॥१२६०॥

चमंकहि षग्गरि मंमिरि राज। मनो घन मद्धि सु बीज बिराजि ॥
फड़प्फहि फेफं तड़प्फहि भीर। नचै तिन नद्द सुनद्दिय बीर[3] ॥
छं० ॥१२६१ ॥

पलक्कहि षोनिय श्रोन[4] संपूर। बरै बर अच्छरि सुच्छरि सूर ॥
प्रबोधहि जोधहि गोरिय अप्प। करै प्रथुसिंघ समावरि षप्प ॥
छं० ॥ १२६२ ॥

गहक्किय गज्जि मसंदह राज। चले गुरु हक्कि गहक्किय गाज ॥
नयो सिर साँइ सुबग्गरि बीर। मिल्यौ मनु कुंजर मंझि कंठीर ॥
छं० ॥ १२६३ ॥

नच्यो हय मंझि सु ताजिय तार। जप्यौ मुष रुच्चित उच्चित मार ॥

(१) ए० कृ० को०—सुत्तौ।
(२) मो०—गज्जिय। (३) मो०—नचै तिन सद्दह मद्दह वीर।
(४) मो०—श्रोनाहि।

हए चष मीर मसंद सुढाइ । पर्यौ हय षेत सुधाय अघाइ ॥
छं० ॥ १२६४ ॥

लयौ हयराज सुमार मसंद । क्यो तब बग्गरि राय सुविंद ॥
चढ़े हय नंषिय राज प्रसंग । चढ्यौ हय ताम हुओ हय भ्रंग ।
छं० ॥ १२६५ ॥

दयौ फुनि राज हए अरि बाज । चढे सोइ भंजिय बग्गरि गाज ॥
दयौ फिर राज सु बाजह देव । कढे हय दस्स अनो अनि एव ॥
छं० ॥ १२६६ ॥

टर्यौ रनि बग्गरि घाय अघाय । हए दह पंच मसंद सुराइ ॥
.... ॥
छं० ॥ १२६७ ॥

कवित्त । पर्यो भभिक्क पग्गरिय । बरुनं भग्गरिय सुरंगिग ॥
सुरहलोक शिवलोक । लोक जारध्य कुरंगिय ॥
बालिप्पन जोवनह । बडे बड़पनंह बड़ाइय ॥
समर राज प्रथिराज । बाज दस वेर चढाईय ॥
दिव दिवस देव जंजै करहि । पुह पंजरि षच्छै धरनि ॥
तजि लोक लोक लोकन[1] सघन । बर्यौ देव मंडलि तरनि ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

शाही सेना का पृथ्वीराज को घेरना । सिंह प्रमार का आड़े आकर १५ झुंड सरदारों का मार कर आप मरना ।

भुजंगी॥ पर्यौ बग्गरी देषि गोरी नरिंदं भयौ राह रूपं ग्रस्यौ जानि इंदं
कहैं सब्ब मीरं समं सद्द नंषे[2] । चितं आतपं जानि ग्रीषम्म धंषे ॥
छं० ॥ १२६९ ॥

धरे लेहु लेहू सबै हिंदु राजं । चले चाल बंधे सुरं मीर गाजं ॥
धरे पारसं कुंडली चाहुआनं । मिले मीर इक्के ढुके राज थानं ॥
छं० ॥ १२७० ॥

---

(१) ए० कृ० को०—लोकत ।
(२) ए० कृ० को०—तंषे ।

गजै नद्द गीसान भेरी भयंदं । रनं तूर पूरं नदे सिंघ नद्दं ॥
गेजं बिंटयं राज मद्दं सुमत्तं । ठनंक्के घनं घूघरं घंटयंतं ॥
छं० ॥ १२७१ ॥

षनक्के षितं पष्षरं षान षानं । फिरं ढाल ढालं पताकं पराणं ॥
झलक्कै सवें धीर बानं ते बानं । हनं हन्न सद्दं बुलं चाहुआनं ॥
छं० ॥ १२७२ ॥

चमक्कै चमक्कं सनाहं सनाहं । किलंकार धक्कार झक्कार ग्राहं ॥
गहै हथ्थ हथ्थं कमानं कमानं । धरे नेज षग्गे उचज्जे उपानं ॥
छं० ॥ १२७३ ॥

वचे दीनं दीनं सुएनं मसद्दं । झलक्कै मुषें मीर तेजं सुदंदं ॥
दिषे मीर राजे गिरंदे गहक्के । कढ़े चाहुआनं कुपानं सुहक्के ॥
छं० ॥ १२७४ ॥

दिषे राज पामार सिंघं समुष्षं । मयौ सांइ सीसं फिरयो रिम्म रुष्षं ॥
हनूमंत इष्टं जपै जाप तामं । क्रम्यौ सिंघ जेमं गजेंदंनि दामं ॥
छं० ॥ १२७५ ॥

मिल्यो धाय मज्जं गजे मीर जूहं । घटं वीर षंडे कलं मंचि कूहं ॥
हने सिंघ षग्गं गुरं गज्जि गज्जं । हने सुंडि दंतं पयं कंध भज्जं ॥
छं० ॥ १२७६ ॥

धमक्के धरा नाग नागं सभागें । भजै केवि चिक्कार छंडे बिआगं ॥
धकै बीर पामार रूपं विरूरं । ढरैं मीर सीसं धरन्नी करूरं ॥
छं० ॥ १२७७ ॥

भ्रमै आवधं भूर सामुष्प मुष्षं । थलं अंबुजं पूरि सा सीसं रुष्षं ॥
करं अग्ग वढ्ढै तिनं बाहु तुट्टै । मुषं अग्गहै धरा नाम लुट्टै ॥
छं० ॥ १२७८ ॥

द्रिगं मींडि देषै सिरं तुट्टि तेषै । हयं मंस मीरं कटे सानि सेषै ॥
भंरक्केस भज्जै सकज्जै सुमीरं । करी मंझ पामार गज्जे कठीरं ॥
छं० ॥ १२७९ ॥

फिरै कुंडली तें कतारं करोरं । फिरै मीर जे मंमनों दंड धारं ॥

(१) ए० कृ० को०-भतं कीतारं ।

लषै द्रिग पामार सा मुक्कि वांमं।मनी प्रातमीरं ढकै मैन' तामं॥
छं० ॥ १२८० ॥

गजं बाज तुट्टै असी सिंघ सेसं। षलक्कै सुश्रोनं परे षंड वेसं॥
भरक्कै विभज्जै द्रिगं जेथ सथ्थे। रुवं भान मध्यान ग्रीषम्म रथ्थे॥
छं० ॥ १२८१ ॥

जबै देषियं सोइ भाजंत सेनं। जपे तात मातं विरुरं सुबेनं॥
तबै षान राजन्न ताजन्न सेरं। अली षान आकूब हारंन हेरं॥
छं० ॥ १२८२ ॥

बली मीर रोसंन दीसंब दाहं। अलीषान आसन्नि अलीषां उमाहं
दहं पंच साहाब सापास बानं। बरं तेक हूरं/समं प्रान थानं॥
छं० ॥ १२८३ ॥

विचल्ली जबै सिंघ साहाब सेनं। करे हक्क कम्मं दहं पंच तेनं॥
तयं आप सिंघं समं जुद्ध लग्गे। सहा सार[2] आवद्ध आवद्ध जग्गे॥
छं० ॥ १२८४ ॥

दहं पंचमीरं पबें सिंह हथ्थे। लयं सेन घाय अघायं समथ्थे
छं० ॥ १२८५ ॥

महाबीर ज्यों भूत सेनं सुनंचै।सकै[3] छोनि नाही धरं ढाहि रंचै॥
तबै पेलयौ गज्ज गोरी सहावं। हयौ षग्ग पामार भासुंड तावं॥
छं० ॥ १२८६ ॥

कटे सुंड दंतं समं जोर धारं। फिरयौ गज्ज भग्गौ विरग्गौ विरारं॥
धुक्यौ घाय अग्घाय सा सिंघ सारं। सिरं देव सुम्मन्न नं षे अपारं॥
छं० ॥१२८७ ॥

ढरयौ अप्प सुभभाय तब्बे परन्नं। सुतं निरभयं निरभयं अप्प सन्नं।
परयौ सिंघ पामर सामार बच्चै। षलं षेत ज्यौं भूत भैरूं सुनच्चै॥
छं० ॥ १२८८ ॥

षुलै देषि सिंघं भभक्कं सुमीरं। रहे वान मानं फिरै फौज तीरं॥

(१) ए० कृ० को०—नेनं।
(२) ए० कृ० को०—मार।
(३) मो०—समो छोनियं नाहि धर ढार ।

दुरयौ सिंघ ज्यो सिंघ छोनी सुषेतं। गहक्के सुमीरं रजेही रहेतं॥

छं० ॥१२८९॥

कबित्त। परत सिंघ आचिडंज। विरद लाई भुज पंजर॥
सुनहित कट्टी जीह। नतरु रष्यौ मुष भंजर॥
ते कतार कुंडलियं। राम भंडली उललिय॥
दल दल मुष मुष चंद। इंद्र क्षर सरवर फुल्लियं।
घनघाय अघाय निघाय अरि। सत सुभाय परतंग करि॥
दल झोत जीन नेनतिहि तिनहि। मिलत हूर दिष्यौ सुहरि॥

छं० ॥१२९०॥

शाही सैना का और जोर पकड़ना और लोहाना का अग्रसर होकर लोह लेना।

उत्तम संदह सत्त। दूत सामंत अठ्ठ परि॥
घरिय वीह दिन व्रित्त। बहिय सलिता श्रोनह भर॥
उभै ईस हूअ बिभेर। विरस हालाहल वित्तौ॥
थके अंग समेत। करत जुद्धह तन रित्तौ॥
दिष्यौ सु राजरत्न सीस पर। करत युद्ध हक्कत सुभर॥
मोनदिय मीर मीरंह समन। गहन राज दौरे दुआर॥

छं० ॥१२९१॥

दूहा। आवत अमीर अभीर है। बिन है गहन सुराज॥
देषि लोहानौ दौरिपरि। ग्रहि असिवर गुर गाज॥

छं० ॥ १२९२॥

लोहाना का खंड खंड होते हुए भी अतुल पराक्रम कर के अपने मारने वाले को मारकर मरना।

भुजंगी॥ तबै गज्जियं बीर आजानबाहं। मिल्यौ मीर अड्डो सुरं जुद्ध राहं॥
असी वक्र उम्भारि गज्जे निहंगं। लई अंस काजैं रजं कज्जि अंगं॥

छं० ॥ १२९३॥

लगे मीर सों धीर जुद्धं सुधारं। तबै आय अड्डे भरं साठि सारं॥

तिनै जुद्ध अनभूत मत्तौ अपारं। तिनं तेग बज्जे अरुभ्रुझे करारं॥
छं० ॥ १२९४ ॥

तबै संमरे दुष्ट आजान बाहं। मुष उच्चर्यौ बीर मंचं विवाहं॥
तिनं हाक धाकं सुवज्जी विरूरं। मच्यौ जुद्ध आमुद्ध जूरं करूरं॥
छं० ॥ १२९५ ॥

सिरं तेक तुट्टे नं उड्डंत दीसं। बिना पंष पंषी परे नभ्भ सीसं॥
कटे मुंज बाहं लषे उद्ध जानं। मनो आननं पंच चीलं चिरानं॥
छं० ॥ १२९६ ॥

दियौ तार तारी चवट्टी जानंदी। दिषै बीर कौतिग्ग सारंग मंदी॥
भरं भार उभ्भार लाहं लुहानौ। बिभ्रं लत्त भ्रोलत प्राहार प्रानौ॥
छं० ॥ १२९७ ॥

परे मीर बीसं उभै अग्गिवानं। तबै आयसं मंत तेगं उभानं॥
दिषै मोन दीनं जये दीनं रद्दं। समं राज दौरै गजे मेघ भद्दं॥
छं० ॥ १२९८ ॥

तिनं उंच गातं बरं उंच हाथं। धगं अंग तुट्टै तिन लात घातं॥
तबै आइयं अड्ड आजान बाहं। तिनं जुद्ध लग्गयौ करूरं कराहं॥
छं० ॥ १२९९ ॥

मिले लोह लोहानं सम्मन्न मीरं। उभै सूर साभ्भ्ना गज्जे गहीरं॥
उभै तेक उतंग उम्भारि भारं। मिले बीर तत्ते उभै नैकतारं॥
छं० ॥ १३०० ॥

हयौ भाथ तेकं सुउन्नै उंनाही। उभै सीस तुट्टे परे भूमि याही॥
लग्गे बथ्थ हथ्थं बलं दून सक्कं। हयौ मीर कट्टारि लोहान धक्कं॥
छं० ॥ १३०१ ॥

पर्यौ मीर संमन्न भूमी भयानं। चढे देव कौतिग्ग देषंन जानं॥
तबै आय तेकं हयौ मोन दीनं। कटी मध्ध तुट्टौ दुअं भाग कीनं॥
छं० ॥ १३०२ ॥

धर्यौ अद्ध भागं धरन्नी सुएसं। उधं भाग कंठं लग्यौ काल भेसं॥
हयौ मोनदी ताम कट्टारि जरं। धरा ताग नच्यौ महामेघ गूरं॥
छं० ॥ १३०३ ॥

परयौ जाम लोहानं षंडं धरन्नी। जयं सद्द भासंत सेना परन्नी॥

* * * *

छं० ॥ १३०४ ॥

कवित्त। परयौ होय आजान। बाह वुयेषंड धरन्नी॥
जै जै जै जंपंत। मुष्य सब सेन परन्नी॥
धनि धनि जंपि सुरेस। सु धुनि नारद उचारं॥
करिग देव सब किति। बुट्ठि नभ पुहुप अपारं।
कौतिग्गि सूर थक्यौ सुरह। भइय टगट्टग भुञ्च भरंनिं।
आसुंस करं अच्छरि सयल। गयो भेदि मंडल तरनि॥

छं० ॥ १३०५ ॥

लोहाना के बाद कमधुज्ज राजा का धावा करना।

स्वामि षडु निज अत। जानि कोप्यो कमधज्जं॥
षग्ग आरुहि वर देह। आभि कुल अप्पन लज्जं।
परे सु धन सामंत। अग्ग देषे सुरतानं।
सजे हयग्गय सूर। वीर वर वीर कमानं॥
जुध करत राज दिष्यो दुहर। अप्पं मंच भैरव जप्यौ॥
उभभारि षग्ग औडन उकसि। करि किलक समुह धप्यौ॥

छं० ॥ १३०६ ॥

आरज्ज सिंह का पराक्रम और एक मुसलमान सरदार का उसे पीछे से आकर मारना।

भुजंगी॥ किलक्कार हक्कार कन्यौ कमडं। सयं भैरवं आय सौमंच वडं॥
चली जोगिनी सथ्य संहं भयानं। चढे आयसं संक्र देषंतं जानं॥

छं० ॥ १३०७ ॥

भरं आरजं रूप देष्यौ अनूपं। किते नेन ढंके किते जुद्ध जपं॥
अरी नूह मध्यं क्रम्यौ षग्ग धारं। गजे सिंघ आवद्द वाहै अपारं॥

छं० ॥ १३०८ ॥

विंयं षंड वाजी नरं तेक तुट्टे। तरं जानि कब्बारिया कूट कुट्टे॥
निजं पान षंडे करे विन्नि षंडं। भजे गज्ज चिक्कार फुट्टे भसुंडं॥

छं० ॥ १३०९ ॥

असीतार नंचंत बीरं बिघाई। नचै जोगिनी श्रोनघुंटै, अघाई ॥
सहस्संच पंच पंचं मधि सहि दिष्यौ। चल्यो तथ्थ मग्गं जुद्धं तंजु रष्यौ॥
छं० ॥ १३१० ॥

जबें आय अट्ठे सतं मीर एक। मिल्यौ मद्धि जुद्धं तिनं तंमि तेकं॥
करे लाघवं षग्ग वाहंत वेगं। ररं केवि तुट्टं धरं केंवि रेगं ॥
छं० ॥ १३११ ॥

परे मीर षंड विहंड धरन्नी। टगं टग्ग लग्गी जुधं जोय रन्नी ॥
सिर तेग तुटंति उड्डंति दीसें। हरे बाय मानो फलं ताल जीसें॥
छं० ॥ १३१२ ॥

परे पग्ग आयास तुट्टी धरन्नी। मत्तो अच्छरी माल नंषं वरन्नी॥
परे षोल उड्डे अनचौ जुवासं। परें मानु जोतिष्य बिंद्रं अयासं॥
छं० ॥ १३१३ ॥

मलं कीच मच्चौ धरं श्रोन धारं। करै भैरवं मद्द मत्तौ फिकारं॥
परे बीस अग्गं दरं पंच मीरं। बिए निक्करे षेत नट्टे सभीरं॥
छं० ॥ १३१४ ॥

पर्यौ दिट्ठ आरज्ज साहाब सम्मं। मध्ये पंच साहस्स मीरं दुरम्मं॥
चल्यौ मार मारं जपे जीह तामं। भजै आसुरं सेन देषे दुरामं॥
छं० ॥ १३१५ ॥

षंप्यौ साहि बाजीसनं मुष्ष अप्पं। करी आरजं सिंघ जेगं सुधप्पं।
करं जंच जंभार षंडौ करूरं। भरक्कंत सेना करै भूर भूरं॥
छं० ॥ १३१६ ॥

दिष्यौ साह संमीप सारूप षानं। चपै अस्व आयौ चपी अस्सठानं॥
तने आय पुट्ठी हए असि तामं। वरं सीस तुट्यौ फिर्यौ भूमि ठाम
छं० ॥ १३१७ ॥

सनंमुष्ष साहाब संमीप मन्ने। बिना सीसं धार्यौ करे षग्ग उन्ने॥
पर्यौ षंड भाकं हयं कंध तुट्यौ। हयं जुत्त साहाब साभूमि लुट्यौ॥
छं० ॥ १३१८ ॥

(१) मो०—सरीरं।

गिरयौ भूमि आरज्ज सारज्ज ह्वर। कुसम सुनष सिर देय भून ॥
छं० ॥ १३१९ ॥

सोमवार के युद्ध का विश्राम।

दूहा ॥ मिले षान पट्टान सब। ग्रहै षंचि सिय साहि ॥
भयौ ग्रस्म विश्रम्म जुध। धुनि धनि ज्ञंपिय ताहि ॥
छं० ॥ १३२० ॥

योगनी और वेतालों का शिव के संमुख युद्ध की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ नह देवासुर जुद्ध। चंद तारका न होई ॥
नंह पारथ भारथ समांन। रांम रावन जुध जोई ॥
नह सुचि पुर त्रिपुरारि। देव दानव नन मानव ॥
समर सिंघ नारद[2] नरिंद। सतु कहु जुध जानव ॥
चामंड राइ बर जैतसी। समर सिंघ राजन्न बलि ॥
संग्राम जिम्म[3] भारथ्थ जित। [4]अमर महा बलवेर ढुलि ॥
छं० ॥ १३२१ ॥

दूहा ॥ हथ्थ एक एकह विहथ। विहथ एक दुक षंड ॥
दल रावन समुझि न परी। बाज राज चामंड ॥
छं० ॥१३२२ ॥

तब कुक्कस वज्जिग दसन। जसनें जेम चितिनार ॥
कलह सुंमिझ मनमथ मथन। सुनि गवरिय[5] उर हार ॥
छं० ॥ १३२३ ॥

यक्ष का वीरों के शीस ले जाकर शिवजी को देना और मृत वीरों का पराक्रम कहना।

कवित्त ॥ दच्छ सीस लै षंच। ईस अग्ग सुसपन्नौ ॥
समर सिंघ चामंड। जैत जद्दव बल दिन्नौ ॥
जोर त्रित्त भारथ्थ। सेन षुट्टी सुलतानी ॥

(१) ए० कृ० को०-जंपे। (२) ए० कृ० को०-रावल। (३) ए० कृ० को०-सिम्म।
(४) ए० कृ० को०-अमरता, वर, सेज, ढुलि। (५) मो०-गरिय।

दै दुबाह दुअ जुद्ध । जास बोली सुर बानी ।
दिन अथ्थियत निसि वर उदित । सर भग्गौ दिव दीनु भौ[1] ॥
सामंत सत्त षेतह परिग । एक समर रावर उभौ ॥
छं० ॥ १३२४ ॥

अद्ध रयनि अंतरिय । जुद्ध बतरिय संपत्तिय ॥
अट्ठ अट्ठ जोगिनिय । अट्ठ बेताल बिछन्तिय[2] ॥
जालंधर संमुषिय । ईस अग्गें इह कथ्थियय ॥
भिरि जिते हिंदु अ तुरक्क । भारथ जो वित्तिय ॥

चामंड राय की तारीफ ।

चावंड राइ सिर समर सिर । सिर जद्दव कूरंभ बलि ॥
पांवार सीस पंचौ पवित । रुद्र माल गंठिय सुमलि ॥
छं० ॥ १३२५ ॥

मंहन सीह बल्लार । नाम जानौ रोहिल्लौ ॥
दल सोसन सुरतान । षग्ग अग्गें सु इकल्लौ ॥
ताड्य धर झल्लरिय । सार हिंदू सुर बुट्ठे ॥
पग पच्छा न फिरंत । षग्ग फेरै मुख उट्ठै ॥
षग भार मान तेतीसनौ । रुहिर भंपै झल्लोरियौ ॥
कट्टिय कुहाइ[3] कलहंत रह । ढकी ढाल ढंढोरियौ ॥
छं० ॥ १३२६ ॥

मारू महनंग राय की तारीफ ।

मारू रा महनंग । धकि नीसान दियंदे ॥
बर कंबर बंगाल । तरलि तोष्पर चढंदे ॥
समर सिंघ रावर सभीर । बीर पावस रा अग्गी ॥
सारष्पर परष्परहि । तेग तेरह सें भग्गी ॥
कलरत्त षान ततार सों । बर बिचाल बोल्यौ समुह ॥
मुहि मरद जानि मिलि मरद हौ । हौं सुहिंदु तुअ मेह रुष ॥
छं० ॥ १३२७ ॥

---

(१) मो०--सौ, मौ । (२) ए० कृ० को०-बिवथ्थिय ।
(३) ए० कृ० को०-कहार ।

परत पान तत्तार । परत मारू रा भग्गन ॥
हंथ कंधह दिय पाइ । उत्तरि बियकन्न सुमग्गन ॥
उंच गात उरहाथ । तेग लग्गी उभ्भारिय ॥
धात षंभ त्रिघघात । जानि झल्लरि झल्लारिय ॥
बर करिम तुट्टि फुट्टिय सुसिद्द । रुहिर धार संमुह ढरिय ॥
सोभियहि सुभट हिन्दू तुरक । जस जोगिनि जै जै करिय ॥

छं० ॥ १३२८ ॥

नाहर राय परिहार की तारीफ ।

इतं नवं सहस नरेस । उत्त षंधार ततारह ॥
इत गोरिय कुल सबल । उत्त नाहर परिहारह ॥
दुवै सेनपति सूर । पूर हंकार हकाइय ॥
इतं संभरिय सहाय । उत्त षुरसान सहाइय ॥
मद मोष छुट्टि जुट्टिय बिसर । दुझ्झर तेग लगिय सुभर ॥
चौ उदर वृत्त लग्गिय सुभर । दुहु नरिंद फुट्टिय जुसिर ॥

छं० ॥ १३२९ ॥

जिहि मुष कूर कपूर । सुवर तंबोल प्रकासिय ॥
जिहि मुष मृग मद वह । सुद्ध किसना गिर वासिय ॥
जिहि मुष रम्यह रम्य । अधर रसधरनि पराइन ॥
जिहि मुष हरिहर भजन । मुत्ति सुभय पाराइन ॥
सो मुष्ष परषि परिहार पर । षग्ग ततार संमुह मिल्लिय ॥
सोइ साम काज हिन्दू तुरक । सो मुष षंड विहंड किय ॥

छं० ॥ १३३० ॥

यक्ष का रावल समरसिंहजी की तारीफ करना ।

दूहा ॥ लिल संदेह समुच्चरिय । बंध कुबेर सुबेर ॥
दिसि दस राय दलंत रहि ॥ समर समप्पन बेर ॥

छं० ॥ १३३१ ॥

(१) मो०—दुतैर । (२) को०—सुमिर

कवित्त । दिषित रवि दिल्लेस । देव मंगल्ल पुर वासिय ॥
समर सिंघ रावर रव । अग्गे ग्रह गासिय ॥
मंच जंच तंचह छलंग । छित छल्ल वल्ल जग्यौ ॥
भिरन तेक गोरिय तलार । गज्जयि गल्ल लग्यौ ॥
मछि महन सीह उप्पार करन । हरन हार सिर मुक्कयौ ॥
चाचग्ग बीर हथ्यह सुहथ । धरनिधार धर धुक्कयौ ॥
छं०॥ १३३२ ॥

परत ताहि परतष्षि । बीर जद्दव जसु लिन्नौ ॥
जोति जगत उच्छरिय । महन सीह दिट्ठ दिन्नौ ॥
कलि कलाप रंघरिय । राय बंसं छल तुट्टौ ॥
तन तिल तिल व्है मत्त । मरन जीवन पहि छुट्टौ ॥
सामंत राय सिर तिंघलय । कर्छु सुबार बीरह बंहिय ॥
सित कंत तंत तिहि बार तब । विवरि विवरि जप्पह कहिय ॥
छं०॥ १३३३ ॥

दूहा ॥ सुविधि ऐक हम कुल कलिय । कै सुंन्दि दृष्षन काभ ॥
गुरजन गुर बंचत रहै । जमी पयंपि पुरान ॥
छं० ॥ १३३४ ॥

कवित्त ॥ एव देव सन्यास । सुगंध तारुनि ब्रमचारिय ।
इन्द्रिय दल दलमलिय । पुरुष पर चरन न नारिय ॥
एक सचल छचिय संध्रम्म । ध्रमंतं स्वामि सुभ ॥
गुन गौ ग्रह ग्रह धंनि । बीर बहिय सुवाद जभ ॥
मंडलिय मरद मेवार पहु । मिलि प्रधान पुच्छिय प्रसन ॥
रिषि कहिय सहिय संम्रित सकल । सुविधि वेद 'बंडिय' सु सुन ॥
छं० ॥ १३३५ ॥

दूहा ॥ तुम वय उद्दिम मोर मन । उन रस सरस न दिट्ठ ॥
दस दस रंघ बिरंध कथ । सुनहु सुनावन इट्ठ ॥
छं० ॥१३३६॥

(१) मो०—बंचिय ।

कवित्त ॥ बीर मंच बावरिंग । राय दिष्षत देवग्गिरि ॥
समर सिंह रावल रवह । भिरनह बाहूं बरि ॥
ते उधान मंडल नरिंद । छचंग छच धर ॥
सन्य सरौ उछय गलग्ग । पूजिग गन्नरी बर ॥
सिर सिरह हीन सुरपति सुपति । विपति बीर गवरिय दलह ॥
तत्तार षान सुरतान छल । विषम बीर कंदल करह ॥
छं० ॥ १३३७ ॥

अन्यान्य मृत सरदारों के नाम और उनका पराक्रम ।

तब सुरंत हिंदुअ नरिंद । सुइ किय मइ नसिय ॥
परिहार पेरतष्षि । इष्षि मंडलह न हंसिय ॥
जुरि जुआन सारंग । अंग ठेलिय दल गोरिय ॥
उहं समेछ सम सूर । रहंत हिंदुअ वर औरिय ॥
प्रिथ प्रथम राव षीची षिज्यौ । षिगं षिन षिन सारह झरिय ॥
अरु अंत दंत दंतीय तन । सुषति रावं पुन्नर परिय ॥
छं० ॥ १३३८ ॥

दूहा ॥ षट अंसिय निसि ऋट घरिय । भरिय सुभूमि भयान ॥
पलचर अरवर विधु विनह । मुरत भूमि सुलतान ॥
छं० ॥ १३३९ ॥

एक सूर सामंत षट । सह षोरिगह षट दून ॥
बिंटि राज प्रथिराज कौं । फिरि पारस दिसि सून ॥
छं० ॥ १३४० ॥

कवित्त ॥ छक्कै सार नरिंद । षग्ग पारस दल सक्किय ॥
बर आतुर पतिसार । सैन चावद्दिसि मक्किय ॥
सवै सध्ध प्रथिराज । रष्षि साई दल ढुक्किय ॥
षग्ग मग्ग बोहिथ्थ । बीर अवसान न चुक्किय ॥
लोपंत लोह गोरी सुभर । पति अद्धौ पति मेर भौ ॥
तन लग्गि धार धारह भनी । पर्यौ बीर सिर भंग भौ ॥
छं० ॥ १३४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-सत ।